bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org
संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 जनवरी प्रथम अंक – 11

वर्तमान कमल ज्योति

संगठन गढ़ें चलें, सुपंथ पर बढ़ें चलें...

UP GLOBAL
INVESTORS SUMMIT
NAND GOPAL GUPTA
PANKAJ JAISWAL

UP GLOBAL
INVESTORS SUMMIT

UP GLOBAL
INVESTORS SUMMIT
10-12 FEBRUARY, 2023 LUCKNOW
NEW
INDIA'S
GROWTH
ENGINE

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"

मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाएं !

"भारत का विकास, पुनः गति पकड़ती जलमार्ग व्यवस्था"

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी में विश्व की सबसे लंबी नदी क्रूज़, एमवी गंगा विलास को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गंगा हमारे लिये सिर्फ एक जलधारा नही है, बल्कि ये भारत की तप तपस्या की साक्षी है। परिस्थितियां जैसी भी रही हो नदियों ने भारतीयों को पोषित और प्रेरित किया है। पर दुर्भाग्य है कि आजादी के बाद से गंगा किनारे के क्षेत्रों को विकास कार्यो से नही जोड़ा गया। जिससे यहाँ के इलाके पिछड़ते गये, पलायन होता रहा। उन्होंने विदेशी टूरिस्टों से कहा कि भारत के पास सबकुछ है। भारत को शब्दों से परिभाषित नही किया जा सकता है, इसे दिल से अनुभव किया जा सकता है। पर्यटकों को इससे देश की धर्म, कला, संस्कृति, पर्यावरण, नदियों और संवृद्ध खानपान से रुबरु होने का सुअवसर मिलेगा। यह क्रूज जिन क्षेत्रों से गुजरेगा, वहाँ विकास की एक नई लाइन तैयार होगी। विरासत आधुनिकता का संगम होगा प्रधानमंत्री ने वाराणसी में टेंट सिटी (Tent City) का भी उद्घाटन किया तथा कई अन्य अंतर्देशीय जलमार्ग परियोजनाओं की आधारशिला रखी। यह महाबोधि मंदिर, हज़ारदुआरी पैलेस, कटरा मस्जिद, बोधगया, चंदानगर चर्च, चार बंगला मंदिर और अन्य सहित गंगा नदी के तट पर 40 ऐतिहासिक स्थलों को जोड़ेगा। राष्ट्रीय जलमार्ग-1 (NW-1) को जोड़ने के अलावा जिसमें गंगा एवं ब्रह्मपुत्र पर राष्ट्रीय जलमार्ग-2 (NW-2) शामिल हैं, क्रूज 27 नदी प्रणालियों को पार करेगा।

हल्दिया (सागर) और इलाहाबाद (1620 किमी.) के बीच गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली को वर्ष 1986 में NW-1 घोषित किया गया था।

विश्व धरोहर स्थलों, राष्ट्रीय उद्यानों, नदी घाटों और बिहार में पटना, झारखंड में साहिबगंज, पश्चिम बंगाल में कोलकाता, बांग्लादेश में ढाका तथा असम में गुवाहाटी जैसे प्रमुख शहरों सहित 50 पर्यटन स्थलों की यात्रा के साथ 51 दिनों की क्रूज़ की योजना बनाई गई।

यह परियोजना रिवर क्रूज़ पर्यटन को बढ़ावा देगी और भारत के लिये पर्यटन क्षेत्र में एक नवीन युग का प्रारंभ करेगी। क्रूज़ को दुनिया के सामने भारत के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिये तैयार किया गया है।

यह विदेशी पर्यटकों को एक अनुभवात्मक यात्रा शुरू करने तथा भारत और बांग्लादेश की कला, संस्कृति, इतिहास एवं आध्यात्मिकता में शामिल होने का अवसर प्रदान करेगी। आधुनिक भारतीय इतिहास में जिस प्रकार से जल मार्गो की उपेक्षा हुई,जिसके कारण नदियों को नाला बना दिया गया था जिससे मृतप्राय हो गयी थी । पर मोदी सरकार की नमामि नदियों की नीति के कारण भारत एक नये विकास के इतिहास की ओर बढ़ रहा है। आज जल, थल, नभ सब में भारत विकास के कदम बढ़ा रहा है जो मानवता प्रकृति के विकास का नया अध्याय गढ़ेगा । जिससे सबका साथ ,सबका विकास का सुमङ्गलकारी मार्ग प्रसस्त होगा। आत्मनिर्भर भारत बनने की दिशा में चौतरफा विकास के नये आयाम गढ़ने में लगा है। प्राचीन काल में ये नदिया भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ थी। लेकिन धीरे-धीरे इनका प्रवाह कम हुआ, प्रदूषण बढ़ा और ये उपेक्षित हो गयी। भारतीय संस्कृति पुनः सहेजी समेटी जा रही है। जो भारतीय वैभव को पुनः लौटायेंगी। bjpkamaljyoti@gmail.com

“स्वदेशो भुवनत्रयम्”

17वाँ प्रवासी भारतीय सम्मेलन इन्दौर

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इंदौर के ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का शुभारंभ किया। सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी और गयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली विशिष्ट और मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने सभी अतिथियों और प्रवासी भारतीयों का भारत में स्वागत किया और इंदौर आने के लिए उनका आभार जताया। मध्य प्रदेश के गर्वनर मंगूभाई पटेल, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। इसमें करीब 70 देशों के 3500 से अधिक प्रवासी भारतीय शामिल हो रहे हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू कार्यक्रम के समापन समारोह में अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियां हासिल करने और अपनी अलग पहचान बनाने वाले प्रवासी भारतीयों को सम्मानित।

राष्ट्र, उस पर निष्ठा रखने वालों के दिलों में जीवित रहता है–

मोदी ने कहा कि भारत से बाहर रहने वाले बुजुर्ग प्रवासियों को अपने जीवन, संघर्ष, उलब्धियों का दस्तावेजीकरण करना चाहिए। बुजुर्गों के पास उस जमाने की यादें होंगी। विश्वविद्यालयों के माध्यम से हमारे डायस्पोरा की हिस्ट्री के दस्तावेजीकरण के प्रयास किए जाएं। कोई भी राष्ट्र, उस पर निष्ठा रखने वालों के दिलों में जीवित रहता है, जब कोई भारत का व्यक्ति विदेश जाता है और वहां कोई भारतीय मिल जाता है, तो उसे लगता है कि पूरा भारत मिल गया। आप जहां कहीं भी रहते हैं, भारत को अपने साथ रखते हैं, दिल में रखते हैं। बीते 8 वर्षों में देश ने अपने डायस्पोरा को ताकत देने के लिए हरसंभव प्रयास किए हैं।

'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सुखद अहसास, 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के साक्षात् दर्शन–

दुनिया के अलग–अलग देशों में जब भारत के लोग एक कॉमन फैक्टर की तरह दिखते हैं, तो 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के साक्षात् दर्शन होते हैं। दुनिया के किसी एक देश में जब भारत के अलग–अलग प्रान्तों और अलग–अलग क्षेत्रों के लोग मिलते हैं, तो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का सुखद अहसास होता है।

भारत में न केवल एक ज्ञान केंद्र बनने की क्षमता है, बल्कि यह हुनरमंदों की राजधानी भी है–

भारत को आशा और जिज्ञासा की दृष्टि से देखा जा रहा है। वैश्विक मंच पर भारत की आवाज सुनी जा रही है। भारत इस साल के G20 का मेजबान भी है। हम इसे केवल एक कूटनीतिक घटना नहीं बनाना चाहते, बल्कि लोगों की भागीदारी का कार्यक्रम बनाना चाहते हैं। भारत में न केवल एक ज्ञान केंद्र बनने की क्षमता है बल्कि हुनरमंदों की राजधानी भी है। हमारे युवाओं में काम के प्रति कौशल, मूल्य और ईमानदारी और दृढ़ संकल्प है। हमारी हुनरमंदों की पूंजी दुनिया का ग्रोथ इंजन बन सकती है।

राष्ट्र अगले 25 वर्षों के 'अमृत काल' में प्रवेश कर चुका है और हमारे प्रवासी भारतीय समुदाय को वैष्विक स्तर पर भारत की भूमिका को और ऊपर उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। हमने सदियों पहले वैष्विक व्यापार की असाधारण परंपरा शुरू की थी। हम असीम लगने वाले समंदरों के पार गए। अलग–अलग देशों, अलग–अलग सभ्यताओं के बीच व्यावसायिक संबंध कैसे साझी समृद्धि के रास्ते खोल सकती है, भारत ने करके दिखाया।

'स्वदेशो भुवनत्रयम्' अर्थात हमारे लिए पूरा संसार ही हमारा स्वदेश–

प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में मोदी ने कहा– हमने कुछ महीने पहले भारत की आजादी के 75 साल मनाए थे! हमारे स्वतंत्रता संग्राम को प्रदर्शित करने वाली डिजिटल प्रदर्शनी यहां आयोजित की गई है और यह गौरवशाली युग को फिर से आप सबके सामने लाती है। 'स्वदेशो भुवनत्रयम्' अर्थात हमारे लिए पूरा संसार ही हमारा स्वदेश है, मनुष्य मात्र ही हमारा बंधु–बांधव है। इसी वैचारिक बुनियाद पर हमारे

पूर्वजों ने भारत के सांस्कृतिक विस्तार को आकार दिया था।

प्रत्येक प्रवासी भारतीय हमारा ब्रैंड एंबेसडर–

मोदी ने कहा यहां उपस्थित प्रत्येक प्रवासी भारतीय ने अपने–अपने क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। मुझे खुशी है कि प्रवासी भारतीय दिवस का आयोजन मध्य प्रदेश में किया जा रहा है, जिसे 'भारत का हृदय' भी कहा जाता है। मध्य प्रदेश में मां नर्मदा का जल, यहां के जंगल, आदिवासी परंपरा और यहां का अध्यात्म आपकी यात्रा को अविस्मरणीय बनाएगी। मैं सभी भारतीय प्रवासियों को भारत का ब्रांड एंबेसडर कहता हूं। भारत के ब्रांड एंबेसडर के रूप में आपकी भूमिका विविध है। आप मेक इन इंडिया, योग, हस्तशिल्प उद्योग और साथ ही भारतीय मिलेट्स के ब्रांड एंबेसडर हैं।

लोग कहते हैं इंदौर एक शहर है, मैं कहता हूं इंदौर एक 'दौर' है। यह वह दौर है जो समय से आगे चलता है, फिर भी विरासत को समेटे रहता है। यहां काफी कुछ है, जो आपकी इस यात्रा को अविस्मरणीय बनाएगा। पास ही में महाकाल के महालोक का दिव्य और भव्य विस्तार हुआ है। आशा करता हूं कि आप सब वहां जाकर भगवान महाकाल का आशीर्वाद भी लेंगे। अद्भुत अनुभव का हिस्सा भी बनेंगे। वैसे हम सभी जिस शहर में है, वह अपने अद्भुत खानपान के लिए मशहूर है। इंदौर ने स्वच्छता के क्षेत्र में अलग पहचान साबित की है। खाने–पीने के लिए अपन का इंदौर देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में लाजवाब है। यहां पोहे का पैशन, कचोरी, समोसे, शिकंजी जिसने भी इसे चखा, उसके मुंह का पानी नहीं रुका, जिसने इसे चखा, उसने कहीं और मुड़कर नहीं देखा। इंदौर में 56 दुकान, सराफा प्रसिद्ध है ही। इंदौर स्वच्छता के साथ–साथ स्वाद की राजधानी भी है। मुझे यकीन है कि आप यहां के अनुभव नहीं भूलेंगे, औरों को भी यहां आने को कहेंगे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 130 करोड़ देशवासियों की ओर से इंदौर में जुटे सभी प्रवासी भारतीयों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि 4 वर्षों के बाद प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन का आयोजन इतने भव्य स्वरूप में हो रहा है। अपनों से आमने–सामने की मुलाकात और आमने–सामने की बात का अलग ही आनंद होता है

इरफान अली को प्रभावित किया मोदी का 'सबका साथ, सबका विकास' विजन –

प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन के मुख्य अतिथि गयाना के राष्ट्रपति मोहम्मद इरफान अली ने मध्य प्रदेश और इंदौर का आभार जताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का आभार, जो मुझे इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया। आज का दिन भारत के लिए ऐतिहासिक दिन है। मोहनदास करमचंद गांधी आज ही के दिन, 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे। 107 साल पहले शारीरिक रूप से कमजोर दिखने वाले, लेकिन मानसिक रूप से दृढ़ गांधी अपने देश लौटे थे। उन्होंने देश को आजाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। याना के राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विषास' विजन को भी सराहा। उन्होंने कहा कि इसके बिना कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता। भारत प्रतिभाओं को निखारने में दुनिया में नंबर एक है। हम जैसे प्रवासी भारत के चलाए जा रहे कार्यक्रमों से काफी कुछ सीख रहे हैं।

भारत वैश्विक मुद्दों पर अपना प्रभुत्व बढ़ाया है, मैं इसकी सराहना करता हूं- राष्ट्रपति संतोखी

राष्ट्रपति चंद्रिकाप्रसाद संतोखी ने कहा– सूरीनाम की जनता की ओर से मैं मध्य प्रदेश और भारत सरकार का आभार प्रकट करता हूं, जो आदर–सत्कार मुझे और मेरे प्रतिनिधिमंडल को मिला है। यह सम्मेलन हम दोनों देशों के आपसी सहयोग को बढ़ाने में मददगार साबित होगा। भारत ने क्षेत्रीय और वैष्विक मुद्दों पर अपना प्रभुत्व बढ़ाया है। मैं इसकी सराहना करता हूं। अमृत काल में इस आयोजन की थीम सामयिक है। अमृत काल नए युग की शुरुआत है। अमृत काल हमारे पूर्वजों की सदियों की मेहनत का नतीजा है। प्रधानमंत्री मोदी, आपके नेतृत्व में G20 निश्चित तौर पर वन प्लानेट, वन फैमिली, वन फ्यूचर की दिशा में काम करेगा। वसुधैव कुटुंबकम् के लिए काम करेगा। दुनिया एक परिवार है। मानव जीवन बहुमूल्य है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में अभिभूत हूं- चंद्रिका प्रसाद संतोखी

सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी ने कहा, आज भारत में सबसे स्वच्छ शहर के रूप में जाने जाने वाले और स्मार्ट शहरों में से एक के रूप में विकसित, मंत्रमुग्ध करने वाले इंदौर और खूबसूरत एमपी की धरती पर पैर रखना मेरा सौभाग्य है। प्रवासी भारतीय दिवस पर आपके विशिष्ट अतिथि के रूप में यहां आकर मैं खुद को बहुत अभिभूत पा रहा हूं।

सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी ने इंदौर में 17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हिंदी में बधाई दी। उन्होंने प्रधानमंत्री की मां के निधन पर शोक भी व्यक्त किया।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि प्रवासी भारतीय दिवस (PBD) का उद्देश्य संबंधों को ताजा करना, ऊर्जा को बढ़ावा देना और इसमें और चरण जोड़ना है। मुझे विष्वास है कि पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत निश्चित रूप से एक प्रमुख शक्ति के रूप में उभरेगा। साथ ही भारत के साथ वालों की वैश्विक हैसियत भी बढ़ेगी।

सुफलाम्: पृथ्वी तत्व

गो–आधारित प्राकृतिक खेती ही धरती का स्वर्णिम भविष्य

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सुफलाम संगोष्ठी ने कहा कि गो–आधारित प्राकृतिक खेती ही पृथ्वी का भविष्य है। प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए सभी जनपदों में प्राकृतिक कृषि बोर्ड का गठन किया गया है। इसके लिए नेशनल परमिट मिशन जारी करने क साथ ही प्रदेश के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों को इसके साथ में जोड़ा गया है। योगी काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थित कृषि विज्ञान संस्थान, भाउराव देवरस न्यास, भारतीय किसान संघ, अक्षय सभागार में सुफलाम पृथ्वी तत्व पर आयोजित अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी में बोल रहे थे। सीएम ने कहा कि प्राकृतिक खेती से जो उत्पाद आयेगा व केमिकल फर्टिलाइजर से खेती करने वालों की तुलना में कहीं से भी कम नहीं है, बल्कि उसके बराबर होगा नही तो उससे अधिक ही होगा। प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के लिए 12 से 15 हजार प्रति हेक्टेयर की लागत से बचत होगी। यह प्रधानमंत्री मोदी के किसानों की आय दोगुनी करने की दिशा में प्रदेश सरकार की पहल है। प्राकृतिक खेती के लिए अलग से गोरखपुर मंदिर के कृषि फार्म में टीम बनाई गई है और उन कर्मचारियों को अलग से ट्रेनिंग देकर उनसे केमिकल फर्टिलाइजर और प्राकृतिक खेती का तुलनात्मक अध्ययन करने को कहा गया है, जिसमें प्राकृतिक खेती के दो अंश जीवामृत और धनामृत का उपयोग करके कितना उत्पादकता हो रहा है और रसायनिक खाद से कितना हो रहा है। प्रदेश के सभी जनपदों के साथ में बुंदेलखण्ड क्षेत्र को भी प्राकृतिक खेती संग जोड़ने का अभिनव प्रयास प्रदेश सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती के उत्पादों को प्रमाणित करने के लिए आठ जनपदों संग वाराणसी में भी सर्टिफिकेशन आर्गेनिक लैब बनाने का काम चल रहा है। 89 कृषि विज्ञान केन्द्र और छह कृषि विवि0 जिसमें से चार प्रदेश सरकार द्वारा संचालित हैं को कहा गया है कि वे प्राकृतिक और जैविक खेती के उत्पादों को प्रमाणिकता प्रदान करने के लिए कार्य करें, जिससे उसके बेहतर तरीके के साथ मार्केटिंग सरकार के द्वारा किया जा सके। योगी ने अपने संबोधन में कहा कि आने वाले जी–20 सम्मेलन, जिसमें पृथ्वी की 60 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व है, गो आधारित प्राकृतिक ओर जैविक खेती का भारत के दृष्टिकोण को पुरजार तरीके के साथ में रखा जायेगा। इस दौरान उन्होंने स्वतंत्रता भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सुफलाम् कार्यक्रम में प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए किसानों से बातचीत की। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य भैया जी जोशी ने भारतीय चिंतन में जन सामान्य को पंच भूतों के प्रति श्रद्धा भाव रखने की परंपरा को विकसित करने के संकल्पना को धरातल पर लाने की आग्रह किया। कहा कि संपूर्ण विश्व अभी भी भ्रमित हो दोराहे पर खड़ा है। पहला रास्ता आधुनिक विकास का है और दूसरा रास्ता समझौता न करते हुए विकास के मार्ग पर चलने का है।

भारत की संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम् के सिद्धांतों पर आधारित है, पूर्वजो के इस ज्ञान को और अधिक शक्ति प्रदान करने की आवश्यकता है।

मोटे अनाज को विश्व में मिली है मान्यता : केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि भारत की संस्कृति वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांतों पर आधारित है, पूर्वजो के इस ज्ञान को और अधिक शक्ति प्रदान करने की आवश्यकता है। भारत में 12 स्थानों पर सुफलाम् का सफल आयोजन हो चुका है। वर्तमान समय में प्रधानमंत्री भी पंच भूतों के संरक्षण के लिए भारत अथवा दुनिया के हर राजनीतिक मंच पर भारतीय ज्ञान को रख रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2023 संयुक्त राष्ट्र संघ के मोटे अनाज का वर्ष घोषित किया है। जगतगुरू ज्ञानेश्वर जी महाराज जी ने कहा कि वैदिक परम्पराओं में पांच तत्वों को महत्व दिया गया है, भूमि को माता कहा गया है, क्योंकि वो सबकी पोषक है दूसरी हमारी गौ माता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की विषय स्थापना भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय महामंत्री मोहिनी मोहन मिश्रा, ज्ञानेश्वर दास जी महाराज और भारतीय किसान संघ के राष्ट्रीय संगठन मंत्री दिनेश कुलकर्णी ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बीएचयू के कुलगुरू प्रोफेसर वीके शुक्ला ने की। संचालन भाऊराव देवरस न्यास के राहुल जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कृषि विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर राकेश सिंह ने किया। कार्यक्रम में प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, प्रख्यात उद्योगपति मनोज भाई सोलंकी, भाउराव देवरस न्यास के राहुल जी ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कृषि विज्ञान संस्थान के प्रोफेसर राकेश सिंह ने किया।

ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट उत्तर प्रदेश का उत्तम प्रयास

– डॉ0 दिलीप अग्निहोत्री

वोट बैंक और तुष्टीकरण की राजनीति से सत्ता नसीब हो सकती है.किन्तु इसका नुकसान अंततः सम्बन्धित प्रदेश को उठाना पड़ता है. ऐसी सरकारों में समीकरण महत्वपूर्ण हो जाते हैं. उनको दुरुस्त बनाये रखना सत्ता पक्ष की प्राथमिकता रहती है. इससे निवेश का मार्ग बाधित हो जाता है. उद्योग जगत की अनेक अपेक्षायें होती है. जिस प्रदेश में उन्हें सुविधाएं मिलती हैं, वह उधर का ही रुख करते हैं. इसमें कानून व्यवस्था की स्थिति का सुदृढ़ होना पहली शर्त होती है.इसके साथ ही सिंगल विंडों सिस्टम,इज ऑफ डूइंग बिजनेस और बिजली की पर्याप्त आपूर्ति, बेहतर कनेक्टिविटी,लैंड बैक की स्थापना आदि की आवश्यकता होती है. उत्तर प्रदेश में करीब छह वर्ष पहले तक इन्हीं तत्वों का अभाव था. पश्चिम बंगाल, केरल जैसे कुछ राज्य आज भी उसी दौर में हैं. भाजपा जद यू गठबंधन सरकार ने बिहार की छवि में सकरात्मक सुधार किया था. लेकिन नीतीश कुमार ने राजद से गठबंधन करके बिहार को एक बार फिर जंगल राज के दौर में पहुँचा दिया है. दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने निवेश के अनुरूप माहौल बनाने का प्रभावी कार्य किया है. इसके लिए अपेक्षित सभी मोर्चों पर अभूतपूर्व सुधार हुआ है. यहां इनवेस्टर्स समिट और प्रस्तावों के शिलान्यास से अनेक अध्याय कायम हुए.अब उत्तर प्रदेश ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट के लिए तैयार हो रहा है. इस संबंध में योगी आदित्यनाथ की मुंबई यात्रा उल्लेखनीय रही. योगी आदित्यनाथ पहली बार मुख्यमंत्री पद की शपथ तत्कालीन राज्यपाल राम नाईक ने दलाई थी. तब उन्होंने विश्वस व्यक्त किया था कि योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में यूपी उत्तम प्रदेश बनेगा. उनका कथन साकार हो रहा है. यह सन्योग था कि इस बार मुंबई में योगी आदित्यनाथ की मुलाकात राम नाईक से भी हुई. योगी ग्लोबल इनवेस्टर्स समिट के संदर्भ में मुबई गए थे. उद्योगपतियों से उनकी सार्थक बैठक हुई. सभी ने उत्तर प्रदेश में निवेश के प्रति उत्साह दिखाया।

योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा सभा में कहा था कि पहले उत्तर प्रदेश का मतलब दंगे वाला, देश के विकास में बाधक बनने वाला प्रदेश के रूप में पहचान थी। लेकिन पिछले साढ़े पांच सालों में यूपी ने खुद को विकास के साथ जोड़ा है. बेहतरीन कानून व्यवस्था लागू करके देश को एक नया मॉडल दिया। यूपी इज ऑफ डूइंग बिजनेश में कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। राज्य बजट करीब साढ़े छह लाख करोड़ पहुंच गया है। छह लाख पंद्रह हजार करोड़ के बजट के बाद तैतीस हजार करोड़ का अनुपूरक बजट पेश किया गया था। जिन राज्यों की आबादी कम है,वह घाटे का बजट पेश करते हैं। यूपी सरप्लस राजस्व वाला प्रदेश है। उत्तर प्रदेश देश की अर्थव्यवस्था का इंजन बन रहा है.आज यूपी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला प्रदेश है। एक ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमि वाला प्रदेश बनाने के लिए काम किया जा रहे है। पांच सालों में साढ़े चार लाख करोड़ से अधिक के निवेश आये हैं। अगले महीने ग्लोबल इन्वेस्टर समिट का आयोजन किया जा रहा है। यूपी में डेढ़ लाख करोड़ से अधिक का निवेश हुआ है। पांच वर्ष पहले करीब अस्सी हजार करोड़ निवेश हुआ था. वर्तमान सरकार विकास का विजन लेकर हम आगे बढ़ रहे हैं। यूपी डेटा सेंटर का हब बन रहा है। पहली डिस्प्ले यूनिट चीन से यूपी में आई। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में विभिन्न सेक्टर में तमाम ऐसे कार्य शुरू होने जा रहे हैं जिनसे उत्तर प्रदेश की पहचान को नया आयाम मिलेगा। इसमें चिकित्सा, कानून व्यवस्था, पर्यटन, शिक्षा और इन्फ्रास्ट्रक्चर डवलपमेंट पर खासा फोकस किया गया है। योगी आदित्यनाथ के एजेंडे में प्रदेश की कानून व्यवस्था शुरू से ही प्रमुखता पर रही है। इसी का नतीजा है कि प्रदेश में पिछले साढ़े पांच वर्षों में कानून का राज पूरी तरह से स्थापित हुआ है और अपराध की घटनाओं में काफी गिरावट दर्ज की गई है। नये साल पर अपराध और अपराधियों पर लगाम लगाने के साथ प्रदेश में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए राज्य सरकार ने पुलिस को अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस करने को लेकर ड्रोन की खरीदारी के लिए बजट जारी कर दिया है। प्रत्येक जिले को दो ड्रोन दिये जा रहे हैं। नये साल पर करीब दो हजार बॉडी वार्न कैमरे खरीदे जाएंगे, जिसकी अनुमति मिल चुकी है। नये साल पर प्रदेश के सभी थानों को पूरी तरह से सीसीटीवी से लैस कर दिया जाएगा। यूपीसीडा ने प्रदेश को वन ट्रिलियन इकोनॉमी बनाने व इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए पंद्रह हजार एकड़ से अधिक का लैंडबैंक तैयार कर लिया है.जिससे ग्लोबल समिट में आने वाली वैश्विक कंपनियों को यहां प्लांट और अपने प्रोजेक्ट लगाने में कोई असुविधा ना हो. यूपीसीडा ने लैंडबैंक से कनेक्टिविटी को बेहतर करने की दिशा में प्रयास शुरू कर दिए हैं। यूपीसीडी ने अन्य लैंडबैंक के लिए स्पिनिंग मिल्स की बंद इकाइयों की भूमि, स्कूटर इंडिया लखनऊ की डेढ़ सौ एकड़, गाजियाबाद की पांच एकड़, हरदोई की ढाई सौ एकड़ एवं अन्य ग्राम समाज इत्यादि की भूमि लेने की कार्रवाई शुरू कर दी है। औद्योगिक क्षेत्र के श्रमिकों के रहने के लिए डोरमेट्री तथा कम्युनिटी टॉयलेट्स का निर्माण युद्धस्तर पर किया जा रहा है। मुंबई में योगी आदित्यनाथ ने बैंकों व वित्तीय संस्थाओं से प्रदेश के विकास में सहभागी बनने का आह्वान किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मादी ने देश को पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर का आकार देने का निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में अलग–अलग सेक्टर चिन्हित करते हुए प्रदेश सरकार द्वारा सभी सेक्टरों में

कार्यवाही की जा रही है।यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के सम्बन्ध में मुम्बई में विभिन्न बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के वरिष्ठ अधिकारियों से योगी ने संवाद किया.उन्होने बैंक अधिकारियों को आश्वस्त किया कि प्रदेश सरकार न केवल आपके पूरे सिस्टम और पूंजी की सुरक्षा की गारण्टी लेगी, बल्कि हर प्रकार का सुरक्षित वातावरण भी प्रदेश में उपलब्ध कराने में अपना योगदान देगी। प्रदेश का पर्सेप्शन बदला है। प्रदेश का राजस्व बढ़ा है। आज उत्तर प्रदेश राजस्व सरप्लस स्टेट है। इस सदी की सबसे बड़ी महामारी का सामना और वित्तीय अनुशासन का पालन करते हुए उत्तर प्रदेश ने सबका ध्यान आकर्षित किया है। आज देश व दुनिया के उद्यमी और निवेशक प्रदेश में निवेश करना चाहते हैं। ऐसा पहली बार हुआ कि राज्य में निवेश को आकर्षित करने के लिए प्रदेश सरकार की टीम देश से बाहर विश्व के अन्य देशों में गयी। प्रदेश के आठ अलग–अलग समूहों ने सोलह देशों में जाकर इक्कीस शहरों का भ्रमण किया। इस टीम को लगभग साढ़े सात लाख करोड़ रुपये के निवेश के प्रस्ताव प्राप्त हुए। एक बिलियन डॉलर का जापान से भी निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुआ है, जो प्रदेश में अपनी रुचि रख रहा है। करीब एक लाख एमएसएमई यूनिटों के साथ उत्तर प्रदेश में देश का सबसे बड़ा आधार मौजूद है। इस सेक्टर को प्रमोट करने की एक जनपद, एक उत्पाद योजना संचालित है। यह देश की एक लोकप्रिय योजना है। इण्टरनेशनल एयरपोर्ट अगले साल तक क्रियाशील हो जाएंगे। दस एयरपोर्ट पर वर्तमान सरकार द्वारा कार्य किया जा रहा है। पांच एयरपोर्ट बनकर तैयार हो गये हैं। इन एयरपोर्ट हेतु एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इण्डिया के साथ एमओयू किया जा चुका है। अन्य पांच हवाई अड्डों को भी शीघ्र पूरा करने की कार्यवाही की जा रही है। प्रदेश के पांच शहरों का मेट्रो की सुविधा से जोड़ा गया है।

प्रदेश सरकार द्वारा सत्रह स्मार्ट सिटी का विकास किया जा रहा है। औद्योगिक विकास के लिए मेडिकल डिवाइस पार्क, अपैरल पार्क, फार्मा पार्क सहित अन्य योजनाएं संचालित की जा रही हैं। एशिया का सबसे बड़ा एयरपोर्ट जेवर में बनाया जा रहा है। राज्य की पच्चीस सेक्टोरल नीतियां निवेशकों के सामने हैं। यूपी ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट के लिए वैश्विक निवेशकों से अब तक लगभग सात लाख बारह हजार करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं। प्रदेश सरकार ने तेजी के साथ इस पर कार्य प्रारम्भ किया है। उत्तर प्रदेश ने विगत पांच वर्षों में चार लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश को आसानी से जमीनी धरातल पर उतारने में सफलता प्राप्त की है। प्रदेश में चार लाख अड़सठ हजार करोड़ रुपये के एमओयू हुए थे, जिसमें से चार लाख करोड़ रुपये के एमओयू को धरातल पर उतार रहे हैं।

इन्वेस्टर समिट की समझ' 'विपक्ष को नहीं है – भूपेन्द्र सिंह चौधरी

उत्तर प्रदेश नए बदलाव की ओर बढ़ रहा है। यूपी में लाखों करोड़ का निवेश होने जा रहा है। युवाओं को रोजगार के अपार अवसर मिलने जा रहे हैं। योगी सरकार यूपी के वासियों की जिंदगी में खुशियां लाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है और विपक्ष को यही बात हजम नहीं हो रही है। विपक्ष नहीं चाहता कि उत्तर प्रदेश में निवेश हो। विदेशी निवेशक यहां आएं और बड़े पैमाने पर उद्यम लगाएं। वो यह समझ नहीं पा रहे कि जो काम इतने वर्षों में कोई नहीं कर सकता, वो सीएम योगी ने महज 5 वर्षों में कैसे कर दिखाया। विपक्ष को समझना होगा कि अब यूपी की राजनीति बदल चुकी है। जनता उसके साथ है जो विकास की बात करेगा, रोजगार की बात करेगा। प्रदेश की प्रगति सीएम योगी की प्राथमिकता है और प्रदेश की जनता इस बात को भली भांति समझ चुकी है। भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि नेता प्रतिपक्ष समेत विपक्ष के नेताओं को ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट की समझ ही नहीं है।

'विपक्ष को नहीं पता रोड शो और समिट का अंतर'

श्री चौधरी ने कहा कि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट को लेकर सिर्फ प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश में बल्कि विदेशों में भी उत्साह देखने को मिल रहा है। विभिन्न देशों के उद्योगपति यूपी में अपना उद्योग शुरू करना चाहते हैं। प्रदेश के इंफ्रास्ट्रक्चर में जो सुधार हुआ है उसे पूरी दुनिया रिकगनाइज कर रही है, जबकि विपक्ष आंखें बंद किए हुए है। यह इन्वेस्टर सम्मिट पर टिप्पणियां कर रहे हैं, रोड शो पर टिप्पणियां कर रहे हैं, जबकि इन्हें इन्वेस्टर समिट की समझ तक नहीं है। इन्हें रोड शो और इन्वेस्टर्स समिट के बीच का अंतर ही नहीं पता है।

यूपी के नाम से दूर भागते थे निवेशक'

समाजवादी पार्टी पर हमला करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश में चार बार सपा की सरकार रही, लेकिन यह प्रदेश में एक पैसे का इन्वेस्टमेंट नहीं ला पाए। इनकी सरकार में विदेशी तो छोड़िए देश के निवेशक भी यूपी के नाम से दूर भागते थे। इतना ही नहीं, उत्तर प्रदेश के स्थानीय निवेशक भी दूसरे प्रदेशों में खुद को ज्यादा महफूज समझते थे। व्यापारी भ्रष्टाचार से पीड़ित था। सरकार से जुड़े गुंडे, अपराधी उनसे वसूली करते थे। आज मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में पूरे प्रदेश में बदलाव आया है। आज कोई गुंडा, अपराधी किसी व्यापारी को परेशान नहीं कर सकता। न वसूली हो सकती है और न छिनैती। गुंडे और अपराधियों को उनकी सही जगह पहुंचा दिया गया है।

मुख्यमंत्री योगी के सुशासन में आ रहा निवेश'

श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने आगे कहा कि सपा सरकार में युवाओं को रोजगार नहीं मिल रहे थे। जो नौकरियां मिल भी रही थीं उसमें परिवार के लोग ही डाका डालने का कार्य कर रहे थे। युवाओं के सामने बहुत सीमित अवसर थे और वहां भी परिवार का कब्जा था। एक–एक स्थान के लिए लाखों की बोली लगती थी। अब बदले परिवेश में सकारात्मक माहौल में सुरक्षा और सुशासन के कारण यूपी में यदि निवेशक आ रहा है तो यूपी पर टिप्पणी कर लोगों को हतोत्साहित कर रहे हैं।

वैभवशाली राष्ट्र निर्माण में कार्यकर्ता अपनी भूमिका सुनिश्चित करें: बी.एल. संतोष

उत्तर प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों, क्षेत्रीयों अध्यक्षों, जिलाध्यक्ष, जिला प्रभारियों और मोर्चों के अध्यक्षों की बैठकें मुख्यालय पर सम्पन्न हुई। राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री बीएल संतोष जी की उपस्थित में हुई बैठकों में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी श्री राधा मोहन सिंह जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी जी, प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह जी सहित राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती रेखा वर्मा, राष्ट्रीय मंत्री विनोद सोनकर , सहप्रभारी श्री सत्याकुमार, श्री संजीव चौरसिया जी उपस्थित रहे। संगठनात्मक प्रवास पर पहुंचे।

श्री बीएल संतोष जी ने पार्टी के प्रदेश पदाधिकारियों –क्षेत्रीय अध्यक्षों और जिलाध्यक्ष व जिला प्रभारियों की बैठकों में संगठन . विस्तार पर बल देते हुए कहा कि सशक्त मंडल–सशक्त बूथ को अपने कार्य का आधार बनाकर पार्टी के विस्तार का कार्य निरन्तर करते रहना है। प्रदेश में होने वाले विधान परिषद के चुनाव और नगर निकायों के चुनावों में पार्टी की विजय सुनिश्चित करने के संकल्प के साथ कार्य करना है। हमारा दल ''सर्वव्यापी–सर्वस्पर्शी–सर्वसमावेशी–सर्वग्राही'' है। केन्द्र व राज्य में हमारी सरकार है। भाजपा सरकार अपने संकल्प पत्र में किये गए संकल्पों को पूर्ण करते हुए जनकल्याणकारी योजनाओं व निर्णयों के द्वारा जन–जन की आर्थिक व सामाजिक उन्नति के लिए कार्य कर रही है। ऐसे में हम सब का दायित्व बनता है कि भाजपा सरकार की योजनाओं का व्यापक प्रचार –प्रसार हो और योजनाओं का लाभ समाज के हर जरूरतमंद तबके और पात्रों तक पहुंचे।

हमारा दल सर्वव्यापी–सर्वस्पर्शी–सर्वसमावेशी–सर्वग्राही है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह . चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प की पूर्णतः में प्रत्येक कार्यकर्ता को जुटना है और वैभवशाली राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका सुनिश्चित करना है। उत्तर प्रदेश के परिश्रमी कार्यकर्ता लगातार जीत की नई इबारत लिख रहे है। यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहे और हम सब पार्टी संगठन की योजनानुसार कार्य करते हुए संगठन को मजबूत करने में सफल होगें ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। आगामी विधान परिषद चुनाव और नगर निकाय के चुनावों में जनता से सम्पर्क व संवाद और भाजपा सरकार द्वारा किये गए

कार्यों के बल पर हम अभूतपूर्व सफलता हासिल करेगें।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी श्री राधा मोहन सिंह ने बैठक में कहा कि भारतीय जनता पार्टी का कार्यकर्ता विचारधारा के लिए कार्य करता है और उस विचारधारा के मूल में वैभवशाली राष्ट्र निर्माण है। भाजपा का कार्यकर्ता राजनैतिक कार्यकर्ता के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में भी पूर्ण समर्पण भाव से काम करता है। यही कारण है कि भाजपा कार्यकर्ता का समाज में सतत् सम्पर्क व संवाद रहता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उत्तर प्रदेश में पार्टी की जीत का सिलसिला अनवरत जारी रहेगा।

भाजपा की केन्द्र व राज्य सरकार की लोककल्याणकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार हो

प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्मपाल सिंह ने बैठक में विगत दिनों पार्टी द्वारा चलाए गए अभियानों व कार्यक्रमों के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए कहा कि पूरे प्रदेश में सक्रिय बूथ समिति की संरचना को हमें योजनापूर्वक और सुदृढ़ करने का कार्य करना है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री बीएल संतोष जी ने कहा कि जनता का समर्थन भाजपा को लगातार मिल रहा है। प्रदेश में चाहे लोकसभा, विधानसभा, स्थानीय निकाय या जिला पंचायतों के चुनाव हो, हर चुनाव में भाजपा की जीत जनता द्वारा भाजपा को दिये गए अपार समर्थन का ही परिणाम है। ऐसे में हम सभी की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि हम जन अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य करते हुए भाजपा सरकार की योजनाओं का लाभ हर पात्र व्यक्ति को मिले इसके लिए कार्य करें।

प्रवास के दूसरे दिन पार्टी मुख्यालय पर जिला पंचायत अध्यक्षों की बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि भाजपा की केन्द्र व राज्य सरकार की लोककल्याणकारी योजनाओं का प्रचार–प्रसार हो। साथ ही हर पात्र व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे इसके लिए सरकार और जनता के बीच सेतु बनकर योजनाओं का लाभ जन–जन तक पहुंचायें।

प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने कहा कि मोदी–योगी सरकार द्वारा गांवो के सर्वांगीण विकास के लिए किये गए कार्यों का ही परिणाम है कि लोकसभा, विधानसभा चुनावों की ही तरह हमें पंचायत चुनाव में भी ऐतिहासिक सफलता मिली। प्रदेश में बड़ी संख्या में हमारे जिला पंचायत अध्यक्ष जीतकर आये। उन्होंने कहा कि हम सबको मिलकर समन्वय, सम्पर्क व संवाद के माध्यम से योजनाओं का लाभ जन–जन तक पहुंचाना है।

मीडिया, सोशल मीडिया विभाग की संयुक्त बैठक में मार्गदर्शन करते हुए कहा कि हमें तथ्यपरक ढ़ग से अपनी बात को रखना चाहिए। वर्तमान समय में सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। ऐसे में त्वरित ढ़ग से सोशल मीडिया पर पार्टी का पक्ष और सरकार की योजनाओं के प्रचार–प्रसार के लिए हमें जिम्मेदारी पूर्वक कार्य करना चाहिए।

स्वामी विवेकानंद और पत्रकारिता

– लोकेन्द्र सिंह

माँ भगवती की कृपा से स्वामी विवेकानंद सिद्ध संचारक थे। उनके विचारों को सुनने के लिए भारत से लेकर अमेरिका तक लोग लालायित रहते थे। लेकिन हिन्दू धर्म के सर्वसमावेशी विचार को लेकर स्वामीजी कहाँ तक जा सकते थे? मनुष्य देह की एक मर्यादा है। भारत का विचार अपने वास्तविक एवं उदात्त रूप में सर्वत्र पहुँचे, वह गूँज उठे और उस पर सार्थक चर्चा हो, इसके लिए वह पुण्यभूमि भारत से निकलकर अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप के अन्य देशों में प्रवचन करने के लिए पहुँच गए। उन्होंने वहाँ के समाचार–पत्रों में अपने व्याख्यानों पर केंद्रित समाचार प्रकाशित होने के बाद समाज के गुणीजनों पर उसके प्रभाव को अनुभव किया। स्वामी विवेकानंद ने समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं की भूमिका को पहचानकर वेदों के विचारों के प्रसार के लिए उनका उपयोग करने पर जोर दिया। स्वामीजी की प्रेरणा एवं योजना से दो प्रमुख समाचारपत्र प्रकाशित हुए– ब्रह्मवादिन एवं प्रबुद्ध भारत। उन्होंने दोनों ही पत्रों की सब प्रकार से चिंता की। समाचारपत्रों के संपादन, रूप–सज्जा एवं प्रसार पर उनकी बारीक दृष्टि रहती थी।

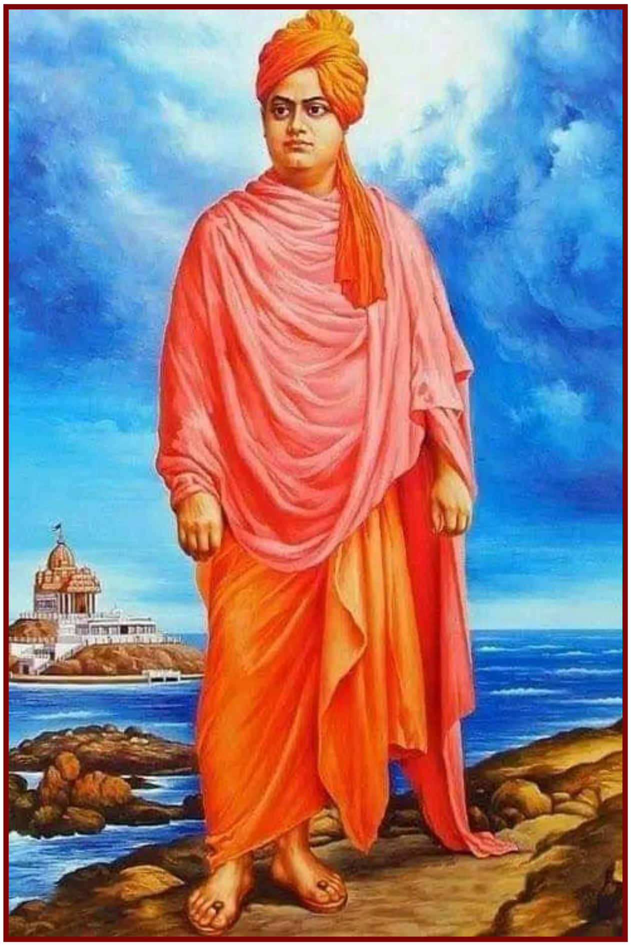

स्वामी विवेकानंद ने समाचारपत्रों को बनाया वेदांत के प्रसार का माध्यम

स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका से 1894 में अपने शिष्य आलासिंगा पेरुमल को कई पत्र लिखे, जिनमें उन्होंने समाचारपत्र–पत्रिकाओं को लेकर चर्चा की है। एक पत्र में स्वामीजी लिखते हैं– "यदि तुम वेदांत के आधार पर एक पत्रिका निकाल सको तो हमारे कार्य में सहायता मिलेगी"। एक अन्य पत्र में स्वामी लिखते हैं– "एक छोटी–सी समिति की स्थापना करो और उसके मुखपत्रस्वरूप एक नियतकालिक पत्रिका निकालो। तुम उसके संपादक बनो। पत्रिका प्रकाशन तथा प्रारंभिक कार्य के लिए कम से कम कितना व्यय होगा, इसका विवरण मुझे भेजो तथा समिति का नाम एवं पता भी लिखना। इस कार्य के लिए न केवल मैं स्वयं सहायता करूंगा वरन यहां के और लोगों से भी अधिक से अधिक वार्षिक चंदा भिजवाने की व्यवस्था करूंगा"। इस तरह अमेरिका में जब उन्हें अधिक समय हो गया और शिष्यों को अपने गुरु से दूर रहने की बेचैनी होने लगी और उन्होंने स्वामीजी से भारत लौटने का आग्रह किया। तब स्वामीजी ने आलासिंगा को लिखा– "मुझे कुछ काम करके दिखाओ– एक मंदिर, एक प्रेस, एक पत्रिका और हम लोगों के ठहरने के लिए एक मकान"। ध्यान दें कि उन्होंने वेदांत के प्रसार–प्रचार के लिए अपने शिष्यों से एक प्रेस की अपेक्षा की।

स्वामीजी के निर्देश उनके शिष्यों ने 'ब्रह्मवादिन' एवं 'प्रबुद्ध भारत' का प्रकाशन तो प्रारंभ कर दिया, लेकिन समाचारपत्रों के प्रकाशन का पर्याप्त अनुभव नहीं होने के कारण अनेक प्रकार की समस्याएं खड़ी होने लगीं। जब स्वामीजी के ध्यान में यह बात आई तब उन्होंने कहा भी कि भले ही हमारे पत्र व्यावसायिक दृष्टि से नहीं निकाले जा रहे हैं लेकिन यह है तो एक व्यवसाय ही। इसलिए समाचारपत्र के व्यावसायिक पक्ष को ध्यान में रखना होगा। यद्यपि स्वामी विवेकानंद भारत से प्रकाशित अपने समाचारपत्रों के लिए अमेरिका में धन संग्रह करते थे। परंतु इस बात को भी भली प्रकार समझते थे कि अमेरिका के धनिकों के बल पर लंबे समय तक भारत के समाचारपत्रों को संचालित नहीं किया जा सकता। भारत के लोग ही अपने समाचारपत्रों की चिंता करेंगे, तभी वांछित परिणाम प्राप्त होंगे। इसलिए वे अपने शिष्यों को कहते थे कि भारत से प्रकाशित समाचारपत्रों के आर्थिक प्रबंधन की चिंता वहीं के लोगों को करनी चाहिए। स्वामी विवेकानंद पत्रिका के उद्देश्य को ध्यान में रखकर उसमें

प्रकाशित सामग्री के चयन एवं उनकी भाषा–शैली को लेकर भी सचेत रहते थे। 'ब्रह्मवादिन' के एक अंक में कठोर भाषा में लिखा एक पत्र प्रकाशित हो गया। इस पर स्वामी विवेकानंद ने अमेरिका से ही आलासिंगा को लिखा कि– "तुमने 'ब्रह्मवादिन' में 'क' का एक पत्र प्रकाशित किया है, उसका प्रकाशन न होना ही अच्छा था। थियोसॉफिस्टों ने 'क' की जो खबर ली है, उससे वह जल–भुन रहा है। साथ ही उस प्रकार का पत्र सभ्यजनोचित भी नहीं है, उससे सभी लोगों पर छींटाकशी होती है। ब्रह्मवादिन की नीति से वह मेल भी नहीं खाता। अतः भविष्य में यदि कभी किसी संप्रदाय के विरुद्ध चाहे वह कितना ही खब्ती और उद्धत हो, कुछ लिखे तो उसे नरम करके ही छापना। कोई भी संप्रदाय, चाहे वह बुरा हो या भला, उसके विरुद्ध ब्रह्मवादिन में कोई लेख प्रकाशित नहीं होना चाहिए। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि प्रवंचकों के साथ जानबूझकर सहानुभूति दिखानी चाहिए"। स्वामीजी ब्रह्मवादिन के माध्यम से समाज में सकारात्मक वातावरण चाहते थे, इसलिए उनका मत था कि पाठकों के पास जो सामग्री पहुँचे उसमें किसी प्रकार नकारात्मकता, कठोरता या द्वेष के भाव न हों।

एक बात ध्यान रखें कि स्वामी विवेकानंद भारतीय विचार के प्रसार लिए समाचारपत्रों का उपयोग करने के हामी थे परंतु वे उन पर आश्रित नहीं थे। उनके शिष्य संगठन खड़ा करने का कार्य छोड़कर पूरी तरह सिर्फ समाचारपत्रों के प्रकाशन एवं प्रचार–प्रसार पर ही ध्यान केंद्रित करने लगें, यह स्थिति निर्मित न हो, इस ओर भी उनका ध्यान था। स्वामीजी 28 मई 1894 को आलासिंगा को लिखते है– "समाचार–पत्र चलाना निस्संदेह ठीक है, पर अनंत काल तक चिल्लाने और कलम घिसने की अपेक्षा कण मात्र भी सच्चा काम कहीं बढ़कर है। भट्टाचार्य के घर पर एक सभा बुलाओ और कुछ धन जमाकर मैजिक लैंटर्न, कुछ मानचित्र और कुछ रासायनिक पदार्थ खरीदो, एक कुटिया किराए पर लो और काम में लग जाओ! यही मुख्य काम है, पत्रिका आदि गौण हैं"। जहाँ एक ओर वे समाचारपत्रों की भूमिका को समझकर उनके प्रकाशन एवं विस्तार पर जोर देते हैं, वहीं दूसरी ओर अपने शिष्यों को चेताते हैं कि यह मूल कार्य नहीं है, मूलकार्य तो जनता के बीच प्रत्यक्ष कार्य करना है। समाज से प्रत्यक्ष साक्षात्कार के अभाव में न तो समाज की चुनौतियों की अनुभूति होती है और न ही कार्य ठीक दिशा में आगे बढ़ता है।

अमेरिका की 'शिकागो इंटीरियर' पत्रिका का रुख विशेषरूप से स्वामी विवेकानंद को लेकर निंदात्मक था। स्वामीजी इसे पागल इंटीरियर कहते थे। आलोचनात्मक या कहें निंदात्मक लेखन से शिष्य निराश न हों और इस प्रकार की सामग्री को अनदेखा कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहें, इसलिए भी स्वामीजी समझाइश देते रहते थे– "मेरे संबंध में कुछ दिनों के अंतर में ईसाई मिशनरी पत्रिकाओं में दोषारोपण किया जाता है परंतु उसे पढ़ने की मुझे कोई इच्छा नहीं है। यदि तुम भारत की ऐसी पत्रिकाएं भेजोगे तो मैं उन्हें भी रद्दी कागज की टोकरी में डाल दूंगा। मेरे विषय में लोग क्या कहते हैं, इसकी ओर ध्यान न देना, चाहे वे अच्छा कहें या बुरा। तुम अपने काम में लगे रहो.... मिशनरी ईसाइयों के झूठे वर्णन की ओर तुम्हें ध्यान ही नहीं देना चाहिए। पूर्ण मौन ही उनका सर्वोत्तम खंडन है"। इस तरह हम देखते हैं कि सिद्ध संचारक होने के साथ ही स्वामी विवेकानंद को समाज जागरण के लिए संचार माध्यमों का कुशलतापूर्वक उपयोग करने की भी सिद्धता थी। स्वामीजी समाचारपत्रों की शक्ति, समाचारपत्रों के सदुपयोग एवं दुरुपयोग के प्रति अपने शिष्यों को भली प्रकार अवगत कराते रहते हैं। इस दिशा में स्वामीजी की दृष्टि का अध्ययन करें तो ध्यान आता है कि वे समाचारपत्रों को नकारात्मक विचारों से मुक्त करके उन्हें सकारात्मक साधन बनाने पर जोर देते हैं।

तुम अपने काम में लगे रहो.... मिशनरी साइयों के झूठे वर्णन की ओर तुम्हें ध्यान ही नहीं देना चाहिए। पूर्ण मौन ही उनका सर्वोत्तम खंडन हैं"।

मेरी मां जितनी सरल हैं, उतनी ही असाधारण हैं !

– नरेन्द्र मोदी

बचपन में अपनी मां के सामने आई मुश्किलों को याद करते हुए पीएम मोदी ने कहा, "मेरी मां जितनी सरल हैं, उतनी ही असाधारण हैं। बिल्कुल दूसरी सभी माताओं की तरह।" छोटी सी उम्र में ही, पीएम मोदी की मां ने अपनी मां को खो दिया था। उन्होंने कहा, "उन्हें मेरी नानी का चेहरा या उनकी गोद तक याद नहीं है। उन्होंने अपना पूरा बचपन अपनी मां के बिना बिताया है।"

उन्होंने वडनगर में मिट्टी की दीवारों और मिट्टी की खपरैल की छत से बने अपने छोटे से घर को याद किया, जहां वह अपने माता–पिता और भाई–बहिन के साथ रहा करते थे। उन्होंने रोजमर्रा में आने वाली मुश्किलों का उल्लेख किया, जिनका उनकी मां ने सामना किया और उन पर विजय प्राप्त की।

उन्होंने बताया कि कैसे उनकी मां न सिर्फ घर के सभी काम किया करती थीं बल्कि कम घरेलू आय की भरपाई के लिए भी काम करती थीं। वह कुछ घरों में बर्तन माजा करती थीं और घरेलू खर्च में सहायता के उद्देश्य से चरखा चलाने के लिए समय निकालती थीं।

पीएम मोदी ने याद करते हुए कहा, "बारिश के दौरान, हमारी छत से पानी टपकता था और घर में पानी भर जाता था। मां बारिश के पानी को जमा करने के लिए बाल्टियां और बर्तन रखती थीं। ऐसे विपरीत हालात में भी मां लचीलेपन की प्रतिमूर्ति थीं।"

> **"आज, मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी और सौभाग्य की अनुभूति हो रही है कि मेरी मां श्रीमती हीराबा मोदी अपने १००वें साल में प्रवेश कर रही हैं। यह उनका जन्म शताब्दी वर्ष होने जा रहा है।"**

स्वच्छता में लगे लोगों के प्रति गहरा सम्मान

पीएम मोदी ने कहा, स्वच्छता एक ऐसा कार्य था, जिसके लिए उनकी मां हमेशा ही खासी सतर्क रहीं। उन्होंने अपनी मां के स्वच्छता बनाए रखने से जुड़े कई उदाहरण दिए।

पीएम मोदी ने कहा कि उनकी मां साफ–सफाई में लगे लोगों के प्रति गहरा सम्मान रखती थीं। जब भी कोई उनके घर से लगी नाली की सफाई करने आता था, तो उनकी मां उसे चाय पिलाए बिना नहीं जाने देती थीं।

दूसरों की खुशी में खुशी तलाशना

पीएम मोदी ने बताया कि उनकी मां दूसरे लोगों की खुशियों में अपनी खुशी तलाश लेती थीं और उनका दिल बहुत बड़ा था। उन्होंने याद करते हुए बताया, "मेरे पिता के एक दोस्त पास के गांव में रहा करते थे। उनकी असमय मृत्यु के बाद, मेरे पिता अपने दोस्त के बेटे अब्बास को हमारे घर पर ले आए। वह हमारे साथ रहा और अपनी पढ़ाई पूरी की। मां को हम भाई–बहिनों की तरह अब्बास से पर्याप्त स्नेह था और उसकी देखभाल करती थीं। हर साल ईद पर वह उसके पसंदीदा व्यंजन बनाती थीं। त्योहारों पर, पड़ोस के बच्चों का घर पर आना और मां की खास तैयारियों का लुत्फ उठाना आम बात थी।"

पीएम मोदी की मां उनके साथ सार्वजनिक रूप से सिर्फ दो अवसरों पर गईं। ब्लॉग पोस्ट में, पीएम मोदी ने उन दो अवसरों के बारे में बताया जब वह अपनी मां के साथ सार्वजनिक रूप से गए थे। एक बार, वह अहमदाबाद के एक सार्वजनिक समारोह में गए जब उन्होंने श्रीनगर से वापस लौटने पर उनके माथे पर तिलक लगाया था, जहां उन्होंने एकता यात्रा पूरी करते हुए लाल चौक पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया था। दूसरा मौका तब आया, जब पीएम मोदी ने 2001 में पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली थी।

पीएम मोदी की मां ने जीवन का एक पाठ पढ़ाया

पीएम मोदी ने लिखा कि उनकी मां ने उन्हें यह अहसास कराया कि औपचारिक रूप से शिक्षा हासिल किए बिना भी सीखना संभव है। उन्होंने एक घटना साझा की जब वह अपनी सबसे बड़ी शिक्षक– अपनी मां के साथ अपने सभी शिक्षकों को सार्वजनिक रूप से सम्मानित करना चाहते थे। हालांकि, उनकी मां ने यह कहकर इनकार कर दिया, "देखो, मैं एक सामान्य महिला हूं। मैंने तुम्हें भले ही जन्म दिया है, लेकिन तुम्हें सर्वशक्तिमान ने पढ़ाया और बड़ा किया है।"

पीएम मोदी ने कहा कि भले ही उनकी मां कार्यक्रम में नहीं आईं, लेकिन उन्होंने सुनिश्चित किया कि वह अपने स्थानीय शिक्षक

जेठाभाई जोशी जी के परिवार से किसी को बुलाएं, जिन्होंने उन्हें अक्षर यानी अल्फाबेट पढ़ाए थे। उन्होंने कहा, "उनकी विचार की प्रक्रिया और दूरदर्शी सोच उन्हें हमेशा चौंकाती रही है।"

एक कर्तव्यपरायण नागरिक

पीएम मोदी ने बताया कि एक कर्तव्यपरायण नागरिक के रूप में उनकी मां ने चुनाव की शुरुआत के बाद से पंचायत से लेकर संसद तक हर चुनाव में मतदान किया।

एक अत्यंत सरल जीवनशैली को अपनाना

मां की अत्यंत सरल जीवनशैली के बारे में बताते हुए, पीएम मोदी ने लिखा कि आज भी, उनकी मां के नाम पर कोई संपत्ति नहीं है। पीएम मोदी ने कहा, "मैंने उन्हें कोई सोने का आभूषण पहने नहीं देखा और उन्हें उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है। पहले की तरह वह आज भी अपने छोटे से कमरे में बेहद सरल जीवनशैली जीती हैं।"

वर्तमान घटनाक्रमों की जानकारी रखना

पीएम मोदी ने कहा कि वह दुनिया में होने वाले घटनाक्रमों की जानकारी रखती हैं। उन्होंने अपने ब्लॉग में बताया, "हाल में, मैंने उनसे पूछा कि वह रोजाना कितनी देर टीवी देखती हैं। उन्होंने बताया कि टीवी पर ज्यादातर लोग एक दूसरे से लड़ने में व्यस्त रहते हैं और वह सिर्फ उन्हें ही देखती हैं जो शांति से समाचार पढ़ते हैं और हर बात विस्तार से बताते हैं। मुझे सुखद आश्चर्य हुआ कि मां घटनाओं पर इतनी नजर रखती हैं।"

इतनी उम्र के बावजूद अच्छी स्मरण शक्ति

पीएम मोदी ने 2017 की एक अन्य घटना के बारे में बताया, जिससे उनकी ज्यादा उम्र के बावजूद सतर्कता का पता चलता है। 2017 में, पीएम मोदी सीधे काशी से अपनी मां से मिलने गए और उनके लिए प्रसाद लेकर आए। पीएम मोदी ने कहा, "जब मैं मां से मिला, तो उन्होंने मुझसे तत्काल पूछा कि क्या मैंने काशी विश्वनाथ महादेव को नमन किया। मां अभी तक पूरा नाम–काशी विश्वनाथ महादेव बोलती है। उस समय बातचीत के दौरान, उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या काशी विश्वनाथ मंदिर जाने वाली गलियां पहले जैसी हैं, मानो किसी के घर के अंदर कोई मंदिर हो।

मैं आश्चर्यचकित रह गया और पूछा कि आप कब मंदिर घूमने गई थीं। उन्होंने बताया कि वह काशी कई साल पहले गई थीं, लेकिन आश्चर्य की बात थी कि उन्हें सब कुछ याद था।"

दूसरों की पसंद का सम्मान करना

पीएम मोदी ने आगे बताया कि उनकी मां न सिर्फ दूसरों की पसंद का सम्मान करती हैं, बल्कि अपनी पसंद थोपने से भी बचती हैं। पीएम मोदी ने बताया, "विशेष रूप से मेरे मामले में उन्होंने मेरे फैसलों का सम्मान किया, कभी मेरे लिए बाधा खड़ी नहीं की और मुझे प्रोत्साहित किया। बचपन से ही, उन्हें लगता था कि मेरे भीतर एक अलग सोच विकसित हो रही है।"

यह पीएम मोदी की मां ही थीं, जिन्होंने उन्हें पूरा समर्थन दिया जब उन्होंने घर छोड़ने का फैसला किया। उनकी इच्छाओं को समझते हुए और उन्हें आशीर्वाद देते हुए, उनकी मां ने कहा, "वैसा करो, जैसा तुम्हारा दिल कहता है।"

गरीब कल्याण पर ध्यान

पीएम मोदी ने कहा कि उनकी मां ने हमेशा ही उन्हें दृढ़ संकल्प और गरीब कल्याण पर ध्यान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने 2001 की एक घटना के बारे में बताया, जब उन्हें गुजरात का मुख्यमंत्री घोषित किया गया था। गुजरात पहुंचने के बाद, पीएम मोदी सीधे अपनी मां से मिलने गए। वह बहुत खुश थीं और उनसे कहा, "मैं सरकार में तुम्हारा काम नहीं समझती, लेकिन मैं तुमसे सिर्फ इतना चाहती हूं कि कभी रिश्वत मत लेना।"

उनकी मां उन्हें आश्वस्त करती रहीं कि उन्हें कभी भी उनकी चिंता नहीं करनी चाहिए और अपनी बड़ी जिम्मेदारियों का ध्यान रखना चाहिए। जब भी वह फोन पर उनसे बात करते हैं, उनकी मां कहती हैं, "कभी कुछ गलत मत करना या किसी के साथ बुरा मत करना और गरीबों के लिए काम करते रहना।"

जीवन का मंत्र- कठोर परिश्रम

पीएम मोदी ने कहा कि उनके माता–पिता की ईमानदारी और आत्म सम्मान उनकी सबसे बड़ी खूबी है। गरीबी और उससे जुड़ी चुनौतियों के साथ संघर्ष के बावजूद, पीएम मोदी ने कहा कि उनके माता–पिता ने कभी भी ईमानदारी का रास्ता नहीं छोड़ा या अपने आत्म–सम्मान के साथ समझौता नहीं किया। किसी भी चुनौती से उबरने का उनका सबसे प्रमुख मंत्र लगातार कठोर परिश्रम था!

मातृशक्ति की प्रतीक

पीएम मोदी ने कहा, "मेरी मां के जीवन की कहानी में, मैं भारत की मातृशक्ति की तपस्या, बलिदान और योगदान देखता हूं। जब भी मैं मां और उनके जैसी करोड़ों महिलाओं को देखता हूं तो मुझे लगता है कि भारतीय महिलाओं के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।"

पीएम मोदी ने अपनी मां के जीवन की कहानी का कुछ शब्दों में इस तरह वर्णन किया...

''अभावों की हर कहानी से परी, एक मां की गौरवशाली गाथा है,
हर संघर्ष से कहीं ऊपर, एक मां का दृढ़ संकल्प है।''

शानदार शताब्दी का ईश्वर चरणों में विराम!

– ललित गर्ग

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जैसे विश्वनायक गढ़ने वाली मां हीराबेन मोदी का निधन न केवल पुत्र के लिये बल्कि समूचे राष्ट्र के लिये एक अपूरणीय क्षति है, एक आघात है।। भारतीय मूल्यों एवं आदर्शों की शताब्दी यात्रा का विराम होना निश्चित ही देश के हर व्यक्ति के लिये शोक का विषय है, लेकिन यह वक्त शोक का नहीं, बल्कि उनके आदर्शों एवं जीवन–मूल्यों को आत्मसात करने का है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान हर किसी के साथ नहीं रह सकता इसलिए उसने माँ को बनाया। हीराबेन ऐसी ही विलक्षण मां थी, एक देवदूत थी। कहने को वह इंसान थी, लेकिन भगवान से कम नहीं थी। वह एक मन्दिर थी, पूजा थी और वह ही तीर्थ थी। वह न केवल नरेन्द्र मोदी की जीवनदात्री बल्कि संस्कार निर्मात्री थी, बल्कि इस राष्ट्र आदर्श मां थी। उनके निधन से ममत्व, संस्कार, त्याग, समर्पण, सादगी एवं आदर्शो का युग ठहर गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी मां को श्रद्धांजलि देते हुए जो कहा, वह प्रेरणा की एक नजीर है। उन्होंने कहा कि, ''शानदार शताब्दी का ईश्वर चरणों में विराम मां में मैंने हमेशा उस त्रिमूर्ति की अनुभूति की है, जिसमें एक तपस्वी की यात्रा, निष्काम कर्मयोगी का प्रतीक और मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध जीवन समाहित रहा है। मैं जब उनसे 100वें जन्मदिन पर मिला तो उन्होंने एक बात कही थी, जो हमेशा याद रहती है कि काम करो बुद्धि से और जीवन जियो शुद्धि से।' मोदी जब–जब मां से मिलने जाते, मां–बेटे का यह मिलन एवं संवाद देश एवं दुनिया के लिये एक प्रेरणा बनता रहा है। मोदी के लिये मां हीराबेन, यह सिर्फ एक शब्द नहीं है, बल्कि उनके जीवन की यह वो भावना है जिसमें स्नेह, धैर्य, विश्वास, प्रेरणा कितना कुछ समाया है। मां हीराबेन, ने मोदी का सिर्फ शरीर ही नहीं गढ़ा बल्कि मन, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास गढ़ा है। और ऐसा करते हुए उसने खुद को खपा दिया, खुद को भुला दिया।

'मां हीराबेन'–इस लघु शब्द में प्रेम की विराटता/समग्रता निहित है। उसके अंदर प्रेम की पराकाष्ठा है या यूं कहें कि वो ही संपूर्ण प्रेम की पराकाष्ठा है। मोदी परिवार के लिए मां हीराबेन प्राण थी, शक्ति थी, ऊर्जा थी, प्रेम थी, करुणा थी, और ममता का पर्याय थी। वे केवल जन्मदात्री ही नहीं जीवन निर्मात्री भी थी। वे नरेन्द्र मोदी ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण परिवार के विकास का आधार थी। उन्होंने अपने हाथों से इस परिवार का ताना–बाना बुना है। इस परिवार के आकार–प्रकार में, रहन–सहन में, सोच–विचार में, मस्तिष्क में लगातार उन्नतिशील एवं संस्कारी बदलाव किये थे। वे मां, मां ही थी, जिसने इस परिवार की तकदीर और तस्वीर दोनों ही बदली है।

मां हीराबेन का सौ वर्षों का संघर्षपूर्ण जीवन भारतीय आदर्शों का प्रतीक है। श्री मोदी ने 'मातृदेवोभव' की भावना और हीराबेन के मूल्यों को अपने जीवन में ढाला है। तभी मोदी के लिये मां से बढ़कर कोई इंसानी रिश्ता नहीं रहा। वह सम्पूर्ण गुणों से युक्त थी, गंभीरता में समुद्र और धैर्य में हिमालय के समान थी। उनका आशीर्वाद वरदान बना। यही कारण है कि तमाम व्यस्तताओं एवं जिम्मेदारियों के बीच मोदी अपनी मां के पास जाते, उसके पास बैठते, उसकी सुनते, उसको देखते, उसकी बातों को मानते थे। उसका आशीर्वाद लेकर, उसके दर्शन करके एवं एक नई ऊर्जा लेकर निकलते थे।

साल 1923 में हीराबेन मोदी का जन्म हुआ था। उनकी उम्र 100 साल थी। हीराबेन मोदी का विवाह दामोदर दास मूलचंद मोदी के साथ हुआ था। हीराबेन मोदी के पांच बेटे और एक बेटी है। हीराबेन मोदी के बेटों के नाम सोमा मोदी, अमृत मोदी, नरेंद्र मोदी, प्रह्लाद मोदी व पंकज मोदी हैं। वहीं उनकी बेटी का नाम वासंती बेन हसमुखलाल मोदी है। दामोदर दास मूलचंद मोदी अब इस दुनिया में नहीं

हैं।, दामोदर दास मोदी पहले वड़नगर में सड़क पर स्टॉल लगाया करते थे। वहीं इसके बाद कुछ समय तक उन्होंने रेलवे स्टेशन पर चाय भी बेचने का काम किया। मोदी ने अपने एक ब्लॉग में बताया था कि कि वडनगर के जिस घर में हम लोग रहा करते थे वो बहुत ही छोटा था। उस घर में कोई खिड़की नहीं थी, कोई बाथरूम नहीं था, कोई शौचालय नहीं था। कुल मिलाकर मिट्टी की दीवारों और खपरैल की छत से बना वो एक–डेढ़ कमरे का ढांचा ही हमारा घर था, उसी में मां–पिताजी, हम सब भाई–बहन रहा करते थे। यह स्वाभाविक है कि जहां अभाव होता है, वहां तनाव भी होता है। लेकिन मां हीराबेन की विशेषता रही कि अभाव के बीच भी उन्होंने घर में कभी तनाव को हावी नहीं होने दिया।

हीराबेन का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणाओं का समवाय रहा है। वे समय की पाबंद थीं, उन्हें सुबह 4 बजे उठने की आदत थी, सुबह–सुबह ही वो बहुत सारे काम निपटा लिया करती थीं। गेहूं पीसना हो, बाजरा पीसना हो, चावल या दाल बीनना हो, सारे काम वो खुद करती थीं। वे काम करते हुए अपने कुछ पसंदीदा भजन या प्रभातियां गुनगुनाती रहती थीं। नरसी मेहता जी का एक प्रसिद्ध भजन है "जलकमल छांडी जाने बाला, स्वामी अमारो जागशे" वो उन्हें बहुत पसंद था। एक लोरी भी है, "शिवाजी नु हालरडु", हीराबेन ये भी बहुत गुनगुनाती थीं। घर को नियोजित चलाने के लिए दो चार पैसे ज्यादा मिल जाएं, इसके लिए हीराबेन दूसरों के घर के बर्तन भी मांजा करती थीं। समय निकालकर चरखा भी चलाया करती थीं क्योंकि उससे भी कुछ पैसे जुट जाते थे। कपास के छिलके से रुई निकालने का काम, रुई से धागे बनाने का काम, ये सब कुछ हीराबेन खुद ही करती थीं। उनको घर सजाने का, घर को सुंदर बनाने का भी बहुत शौक था। घर सुंदर दिखे, साफ दिखे, इसके लिए वो दिन भर लगी रहती थीं। वो घर के भीतर की जमीन को गोबर से लीपती थीं। उनका जीवन स्वावलम्बी था। सादगीमय था। संयमित था।

'मां' की ममता और उसके आंचल की महिमा को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

'मां' हीराबेन यह वो अलौकिक शब्द है, जिसके स्मरण मात्र से ही नरेन्द्र मोदी का रोम–रोम पुलकित हो उठता, हृदय में भावनाओं का अनहद ज्वार स्वतः उमड़ पड़ता और मनोःमस्तिष्क स्मृतियों के अथाह समुद्र में डूब जाता। उनके लिये 'मां' वो अमोघ मंत्र है, जिसके उच्चारण मात्र से ही हर पीड़ा का नाश हो जाता है। मोदी के अनुसार 'मां' की ममता और उसके आंचल की महिमा को शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है, उसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है। जिन्होंने मुझे और मेरे परिवार को आदर्श संस्कार दिए। उनके दिए गए संस्कार ही मेरी दृष्टि में उनकी मूल थाती है। जो हर मां की मूल पहचान होती है। उनके संस्कार एवं स्मृति ही मोदी के भावी जीवन का आधार है।

हीराबेन का बचपन बहुत संघर्षों एवं अभावों में बीता। उनको अपनी मां का प्यार नसीब नहीं हुआ था। एक शताब्दी पहले आई वैश्विक महामारी का प्रभाव तब बहुत वर्षों तक रहा था। उसी महामारी ने हीराबेन की मां को छीन लिया था। हीराबेन तब कुछ ही दिनों की रही होंगी। उन्हें अपनी मां का चेहरा, उनकी गोद कुछ भी याद नहीं, वो अपनी मां से जिद नहीं कर पाईं, उनके आंचल में सिर नहीं छिपा पाईं। हीराबेन को अक्षर ज्ञान भी नसीब नहीं हुआ, उन्होंने स्कूल का दरवाजा भी नहीं देखा। उन्होंने देखी तो सिर्फ गरीबी और घर में हर तरफ अभाव। फिर भी इन्हीं अभावों में उन्होंने अपने छः बच्चों को पाला–पोषा एवं संस्कारों में ढ़ाला। हीराबेन विधाता के रचे इस परिवार को रचने वाली महाशक्ति थी। वे सपने बुनती थी और यह परिवार उन्हीं सपनों को जीता था और भोगता था। वे जीना सिखाती थी, वे पास रहे या न रहे उनका प्यार दुलार, उनके दिये संस्कार परिवार के हर सदस्य के साथ–साथ रहते थे। उन्होंने अपनी संतानों के भविष्य का निर्माण किया। इसीलिए वे प्रथम गुरु के रूप में भी थी। प्रथम गुरु के रूप में मां हीराबेन की इस परिवार के हर सदस्य के भविष्य निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। कभी उनकी लोरियों में, कभी झिड़कियों में, कभी प्यार से तो कभी दुलार से वे अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के बीज बोती रही। उनके सादगीमय जीवन–आदर्शों से समूचा राष्ट्र प्रेरित होता रहा है और युग–युगों तक होता रहेगा। हीराबेन ने संस्कार के साथ–साथ शक्ति भी दी है, उनकी भावनात्मक शक्ति मोदी के लिए ही नहीं, समूचे राष्ट्र के लिये सुरक्षा कवच का काम करती रहेगी।

चतुर्थ औद्योगिक क्रान्ति का अगुआ भारत!

– शिवेश प्रताप

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 7 अक्टूबर, 2022 को कहा कि भारत में चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व करने की क्षमता है और सरकार ने देश को दुनिया का विनिर्माण केंद्र बनाने के लिए सुधारों पर काम किया है। पिछले अवसरों को चुकने वाले भारत के इतिहास में पहली बार, जनसांख्यिकी, मांग और निर्णायक शासन जैसे कई अलग–अलग कारक एक साथ आ रहे हैं। आइये इन बिंदुओं के निहितार्थों को विनिर्माण के परिप्रेक्ष्य में समझें। भारत में बिकने वाले लैपटॉप से लेकर खिलौने तक कभी आपने सोचा कि क्यों मेड इन चाइना होते हैं? विचार करें कि यह जीवन उपयोगी सस्ते सामान भारत में क्यों नहीं बनते और किस प्रकार से चीन की सरकार ने पूरी दुनिया के विनिर्माण को अपने देश में आकर्शित कर एक लगभग अजेय सी आर्थिक शक्ति बन चुकी है। कुछ लोग इसके पीछे चीन के सस्ते श्रम को इसका कारण मानते हैं परंतु यह पूर्ण सत्य नहीं है। आइए समझते हैं कि मोदी सरकार की वह कौन सी नीतियां एवं प्रयास हैं जिससे हम चीन से "दुनिया के कारखाने" की पहचान छीन भारत को चौथे औद्योगिक क्रांति का अगुवा बना सकते हैं।

चतुर्थ औद्योगिक क्रांति का विचार वर्ल्ड इकनोमिक फोरम के संस्थापक और कार्यकारी अध्यक्ष क्लॉस श्वाब द्वारा गढ़ा गया था। चौथी औद्योगिक क्रांति का दौर अपने शैशव के साथ प्रारम्भ हो चुका है। यह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), रोबोटिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी), 3डी प्रिंटिंग, ब्लॉकचेन, जेनेटिक इंजीनियरिंग, क्वांटम कंप्यूटिंग और अन्य तकनीकों जैसी तकनीकों का मिश्रण है। यह नई तकनीकियां कई उत्पादों और सेवाओं के पीछे की वह सामूहिक शक्ति है जो आधुनिक जीवन के लिए तेजी से अपरिहार्य होते जा रहे हैं।

चौथे औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व वह देश करेगा जिसके पास विनिर्माण की शक्ति होगी। भारत सेवाओं के क्षेत्र में तो विश्व भर में अपनी उत्कृश्ट पहचान बना चुका है लेकिन विनिर्माण में अभी भी बहुत पीछे है। सेवाक्षेत्र हेतु इंफ़्रा तथा सप्लाई चेन पर बड़े निवेश की आवश्यकता नहीं होती एवं आउटसोर्सिंग के अधिकतर कार्य लैपटॉप पर सम्पादित हो जाते हैं। इसी कारण सेवाक्षेत्र कम एवं शिक्षित लोगों को रोजगार देता है। इसमें द्वितीयक स्तर के रोजगार कम सृजित होते हैं। दूसरी ओर विनिर्माण एक औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को जन्म देता है जिसमें शिक्षित से लेकर श्रमिक वर्ग तक सभी के लिए रोजगार के अवसर बनते हैं। भारत में विभिन्न कौशल एवं आर्थिक स्तरों पर रोजगार के सृजन से सभी के लिए आय का अवसर पैदा होगा।

विश्व का कारखाना है चीनः-

चीन में कम्युनिस्ट शासन आते ही विनिर्माण के प्रयासों को बल मिल गया था। 2010 में चीन ने निर्णायक रूप से अमेरिका पर बढ़त बनाते हुए विश्व का सबसे बड़ा विनिर्माण आधारित देश बनकर उभरा है। साथ ही चीन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भी एक रहा है। यूएस नेशनल साइंटिफिक फाउंडेशन के एक रिपोर्ट के अनुसार 2012 से चीन उच्च गुणवत्ता विनिर्माण में भी दूसरे नंबर पर स्थापित हो चुका है। 2019 की डेटा के मुताबिक वैश्विक बाजार में 50% हिस्सेदारी के साथ चीन ई–कॉमर्स में भी सबसे आगे हैं साथ ही इलेक्ट्रॉनिक्स वही कल के क्षेत्र में भी चीन ने विश्व के अन्य देशों की अपेक्षा एक निर्णायक बढ़त ले लिया है।

चीन इन इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी एवं उनके उपकरणों का भी सबसे बड़ा उत्पादक है। कई रिपोर्ट्स के अनुसार चीन का संपूर्ण विनिर्माण निर्गम प्रतिवर्श 7:30 से 10% के बीच में रहा है। 2020 के डाटा के अनुसार चीन के सकल घरेलू उत्पाद का 26.18% उसके विनिर्माण क्षेत्र से ही आता है। दुनिया के एक्सपर्ट्स का मानना है कि चीन की श्रम शक्ति दुनिया के सभी विकासशील देशों की श्रम शक्ति से अधिक है तथा यह लगभग सभी औद्योगिक क्षेत्रों में बटा हुआ है। यही कारण है कि चीन को विश्व की फैक्ट्री कहा जाता है।

चीन के विनिर्माण सफलता के कारणः-

प्रारंभिक बीसवीं शताब्दी तक चीन और भारत लगभग समान औद्योगिक एवं निर्यात स्थितियों में थे। 1978 में चीन के नेता देन जाओ पिंग के ओपन डोर नीति औद्योगिक सुधारवादी नीतियों के चलते यहां के विनिर्माण उद्योग को शिखर पर पहुंचा दिया। चीन के दूरगामी योजनाओं तथा बाजारवादी सुधारो ने एक मजबूत प्राइवेट सेक्टर तथा स्टेट नियंत्रित क्षेत्रों के बेहतरीन समन्वय को तैयार किया।

चीन अपने यहां न्यूनतम मजदूरी नीति के आधार पर लोगों को नियुक्त करता है इसलिए यहां पर विनिर्माण उद्योग में बहुत अधिक श्रम शक्ति उपलब्ध है। चीन संसार का सबसे अधिक आबादी वाला देश है जहां श्रम की प्रचुरता है साथ ही चीन के विनिर्माण उद्योग बाल मजदूरी, कार्य के घंटे तथा न्यूनतम मजदूरी दर जैसे कानूनों को बहुत कठोरता से पालन नहीं करते इसलिए उनका लागत मूल्य भी कमाता है साथ ही विनिर्माण संयंत्रों में चौबीसों

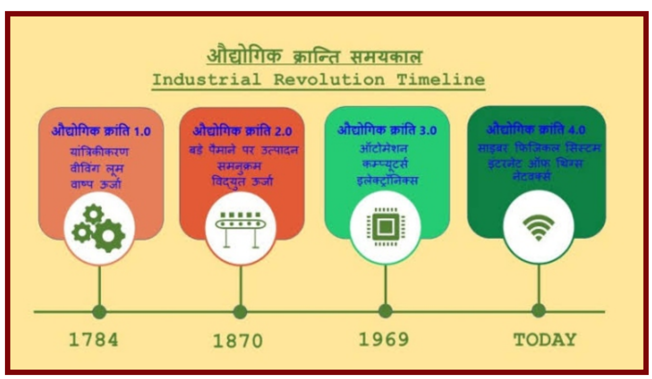

घंटे कार्य सुनिश्चित हो पाता है।

सन् 1950 से ही चीन ने अपने देश में क्षेत्रीय औद्योगिक समूह बनाना प्रारंभ कर दिया था जिसमें शानदोंग, जियांगसू, गुआंगडोंग एवम सिंहियांग जैसे समूह उस समय की ही परिकल्पना का परिणाम है। इन औद्योगिक समूहों के औद्योगिक आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने के साथ साथ निपुण श्रम शक्ति को उपलब्ध कराने हेतु विश्वविद्यालयों की भी स्थापना करके उन्हें इन उद्योग समूहों से जोड़ा गया। ऐसी वर्कफोर्स वहां के उच्च गुणवत्ता के निर्माण में अपना योगदान सुनिश्चित करते हैं। चीन का विनिर्माण उद्योग वहां के व्यापारिक पारिस्थितिकी तंत्र के कारण भी सफल हो सका। क्योंकि कोई भी उद्योग एकाकी रहकर सफल नहीं हो सकता है इसलिए उससे जुड़े हुए आपूर्तिकर्ता, उपकरण, विनिर्माणकर्ता, वितरक, सरकारी एजेंसी तथा उपभोक्ता संरचना भी मौजूद रहनी चाहिए।

चीन के व्यापारिक पारिस्थितिकी तंत्र ने इन सभी को सुनिश्चित किया जिससे विनिर्माण निर्गम बढ़ता है। उदाहरण के लिए चीन का शेनझेन शहर इलेक्ट्रॉनिक उद्योगों की वैश्विक मंडी कहलाती है। यहां विनिर्माण आपूर्ति श्रृंखला को सहयोग करने के लिए एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र बनाया गया है जिसमें उपकरण विनिर्माणकर्ता, सस्ता श्रम, तकनीकी श्रम, वितरणकर्ता एवं उपभोक्ता शामिल है। चीन ने अपने निर्यात वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए 1985 में निर्यात कर छूट नीति को मंजूरी दिया था जिसके तहत निर्यातित माल पर लगने वाले दोहरे कर की व्यवस्था को समाप्त किया गया। इस नीति के कारण ही विश्व के अन्य देशों में कार्य करने वाली कंपनियों ने भी चीन में अपने उद्योग स्थापित किए एवं यहां से सस्ते दरों पर विश्व के अन्य देशों में निर्यात किया।

चीन की सरकार उच्च गुणवत्ता के उत्पादन तथा उच्च प्रतिस्पर्धा के मानकों को कड़ाई से पालन करने के लिए प्रदर्शन आधारित अध्ययन भी करती है। चीन ने वैश्विक विनिर्माण को देश में आकर्षित करने के लिए अपने अवसंरचना यानी इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास पर बहुत अधिक पैसा खर्च किया है।

परंतु पिछले कुछ समय से कुछ कारणों से चीन के विनिर्माण उद्योग की रफ्तार में कुछ कमी देखने को मिल रही है। विशेषज्ञों के अनुसार कोविड–19 महामारी, ऊर्जा आवश्यकता, कोयले की कमी तथा कार्बन उत्सर्जन मानकों के कारण चीन के विनिर्माण उद्योग पर प्रभाव पड़ रहा है। दुनिया के अन्य देश इन सभी समस्याओं से सबक लेते हुए अब अपने विनिर्माण को चीन से बाहर निकालकर अन्य देशों में भी स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं जिससे कि किसी वैश्विक समस्या में अपने जोखिम को कम किया जा सके। सेमीकंडक्टर उद्योग में आए संकट के कारण भी चीन के विनिर्माण उद्योग पर बहुत गहरा असर पड़ा है साथ ही अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल में अमेरिका एवं चीन के व्यापार युद्ध का भी असर चीन की विनिर्माण सुस्ती के रूप में दिखाई देता है।

विश्व विख्यात खिलौना कंपनी एसब्रों में चीन में अपने उत्पादन को आधा करके भारत में अपने संयंत्र स्थापित करने की दिशा में कार्य कर रहा है। एप्पल का आईफोन तथा ऐमेज़ॉन का इको बनाने वाली ताइवान की कंपनी फॉक्सकॉन भी अब भारत में अपने निर्माण संयंत्रों की स्थापना पर कार्य कर रहा है।

क्या भारत भविष्य की विश्व फैक्ट्री बनेगा?

भारत को वर्तमान में विनिर्माण क्षेत्र में न केवल आत्मनिर्भर बनने अपितु इस क्षेत्र की महाशक्ति बनने की आवश्यकता है। जब चीन का विनिर्माण उद्योग निरंतर गिरावट की ओर बढ़ रहा है तो ऐसे में भारत का विनिर्माण उद्योग दुनिया के लिए एक बेहतर संभावना बन कर उभर रही है।

अप्रैल 2021 से जनवरी 2022 तक भारत में 335 बिलियन अमेरिकी डॉलर मूल्य का सामान निर्यात किया था। इसमें भारत ने खनिज उत्पाद, रासायनिक उत्पाद, कीमती पत्थर एवं धातु, तथा कई कच्चे माल की भी सप्लाई करता है। साथ ही भारत का दवा निर्माण उद्योग भी दुनिया भर में सफल है। भारत पूरी दुनिया के 50% वैक्सीन बाजार पर कब्जा करता है अमेरिका के जेनेरिक दवाओं के 40% कारोबार पर भारत का कब्जा है साथ ही ब्रिटेन के कुल दवाओं की मांग का 25% भारत पूर्ण करता है। साथ ही खाद्य एवं प्रसंस्करण उद्योग के द्वारा भी बासमती चावल, मांस, समुद्री भोजन तथा चीनी का निर्यात दुनिया भर में किया जाता है।

विशेषज्ञों के अनुसार आने वाले कुछ वर्षों में भारत का विनिर्माण उद्योग बहुत तेजी से ऊपर जाने वाला है। 2025 तक भारत का उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स बाजार 21.18 बिलियन यूएस डॉलर का हो जाएगा। विशेषज्ञों के अनुसार भारत के भीतर एक वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र बनने की क्षमता है। 2030 तक भारत विष्व की अर्थव्यवस्था में 500 बिलियन अमेरिकी डॉलर का योगदान करने में सक्षम है। साथ ही हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि चीन के विनिर्माण उद्योग के सामने भारत का विनिर्माण उद्योग अभी भी शैशव अवस्था में है। साथ ही ही अपनी देश की जरूरतों को भी पूर्ण करने के लिए भारत चीन सहित अन्य देशों पर निर्भर रहता है।

भारत किसान ने सबसे पहली चुनौती यह है कि वह देश की पहचान को एक बाजार से अधिक विनिर्माण कर्ता के रूप में स्थापित कर सकें। इसके लिए हमें यह जानना होगा कि चीन की तुलना में हम अभी भी कहां पर नीतिगत भूल कर रहे हैं और किन गलतियों के सुधार से हम वैश्विक निवेश को विनिर्माण क्षेत्र में आकर्षित कर सकते हैं।

भारत के मुकाबले चीन दुनिया में 8 गुना अधिक मूल्य का सामान विश्व के अन्य देशों को निर्यात करता है। इसमें इलेक्ट्रॉनिक मशीनरी उपकरण तथा इलेक्ट्रिकल कलपुर्जे भी शामिल है।

2021 भारत का व्यापार चीन के साथ 125.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर पहुंच गया था। इसमें चीन से 97.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर का आयात किया गया एवं मात्र 28.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निर्यात किया गया। यह बात स्वयं सिद्ध करती है कि भारत अभी भी विनिर्माण के बारे में चीन पर कितना अधिक निर्भर है। यद्यपि पिछले 2 वर्ष के रिकॉर्ड में भारत का निर्यात भी 50%

बढ़ा है परंतु इसमें केवल समुद्री भोजन तथा कच्चा माल ही निर्यात किया गया।

चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 2017 के 15.8 बिलियन अमेरिकी डालर से बढ़कर 2021 में 16.4 बिलियन अमेरिकी डालर हो गया है। हमारे देश की अवसंरचना चीन से काफी कमजोर है जैसे रेल तथा रोड की कनेक्टिविटी हो या स्टोरेज क्षमता या फिर संचार की आवश्यकता हर क्षेत्र में चीन के पास स्टेट ऑफ द आर्ट समाधान मौजूद है जबकि भारत मैं अवसंरचना के विकास की कहानी 2014 में केंद्र में मोदी की सरकार आने के बाद प्रारंभ होती है।

भारत का चीन पर बैटरी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों इलेक्ट्रिक व्हीकल तथा उसके उपकरणों हेतु चीन पर पूरी तरह से निर्भर होना औद्योगिक विकास के लिए अच्छा संकेत नहीं है। मार्च 2021 तक भारत इलेक्ट्रॉनिक चिप्स के लिए 100% अन्य देशों पर निर्भर था। संयुक्त राष्ट्र के औद्योगिक विकास समूह के वैश्विक नवाचार सूची 2021 में 132 देशों में भारत का 46वाँ स्थान था।

केंद्र में नरेंद्र मोदी जी की सरकार आने के बाद भारत के विनिर्माण उद्योग कि विकास भागीरथ प्रयास किए गए हैं। विश्व के निर्माण को आकर्षित करने के लिए घरेलू औद्योगिक परिस्थितियों को मित्रवत किया जा रहा है।

मोदी सरकार के भागीरथ प्रयासः-

औद्योगिक विकास के लिए मोदी सरकार बहुत गंभीरता से कार्य कर रही है एवं इसी क्रम में मोदी सरकार ने अपने पहले कार्यकाल में मेक इन इंडिया को जारी किया था तथा पूरे औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए इसी क्रम में स्किल इंडिया तथा उत्पादन से जुड़े हुए इंसेंटिव कार्यक्रम भी लांच किया गया है।

मेक इन इंडिया कार्यक्रम का लक्ष्य है कि भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण उद्योग का योगदान 14% से बढ़ाकर 25% किया जा रहा है। साथ ही इस कार्यक्रम के अंतर्गत निवेश कौशल विकास नवाचार तथा बौद्धिक संपदा के अधिकारों की रक्षा को भी सुनिश्चित किया जा रहा है। एक जनपद– एक उत्पाद के द्वारा हर एक जनपद की इस औद्योगिक क्रांति भागीदारी को सुनिश्चित करने की योजना बनाई गई है। इसका लाभ क्षेत्रीय समृद्धि के रूप में ग्रामीण एवं दूर दराज के क्षेत्रों को मिलेगा।

15 जुलाई 2015 को स्किल इंडिया को लोगों में औद्योगिक तथा स्वरोजगार कौशल का विकास करने के लिए लागू किया गया था। इसका लक्ष्य 2022 तक 300 मिलियन युवाओं को कौशल युक्त श्रम शक्ति के साथ तैयार करना है।

पीएलआई स्कीम को सरकार द्वारा 2020 में जारी किया गया था जो एक निर्गम आधारित योजना है यानी उत्पादन करता के द्वारा उत्पादन किए जाने पर उन्हें इंसेंटिव के रूप में धन आपूर्ति की जाएगी। प्रारंभिक स्तर पर इसे ऑटोमोबाइल नेटवर्किंग प्रोजेक्ट खाद्य प्रसंस्करण उच्च रासायनिक उद्योग तथा सोलर ऊर्जा के फोटो वॉल्टाइक प्लेट के निर्माण जैसे 10 विनिर्माण क्षेत्रों के लिए जारी किया गया है।

मई 2021 में उच्च गुणवत्ता के बैटरी निर्माण हेतु 18000 करोड की पीएलआई स्कीम को जारी किया था। सितंबर 2021 में ऑटो उद्योग तथा ड्रोन उद्योग में विनिर्माण क्षमता को बढ़ाने के लिए 26058 करोड रुपए का पीएलआई स्कीम लाया गया। सेमीकंडक्टर में आत्मनिर्भर बनने तथा आयात को कम करने के लिए सरकार द्वारा 76000 करोड रुपए जारी किए गए हैं।

मोदी सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा सेमीकंडक्टर के विनिर्माण के प्रसार के लिए भी एक स्कीम लांच किया है। इसके लिए अगले 8 वर्षों में 3285 करोड़ रुपए इलेक्ट्रॉनिक कंपोनेंट तथा सेमीकंडक्टर के निर्माण में खर्च किए जाएंगे। अवसंरचना की समस्या का समाधान करने की दिशा में भारत सरकार ने लगभग 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश अपने अवसंरचना के विकास में किया है।

पीएम गति शक्ति विभिन्न मंत्रालयों और राज्य सरकारों की बुनियादी ढांचा योजनाओं जैसे भारतमाला, सागरमाला, अंतर्देशीय जलमार्ग, शुष्क / भूमि बंदरगाहों, वायुसेवाओं आदि को शामिल करेगी। आर्थिक क्षेत्र जैसे कपड़ा क्लस्टर, फार्मास्युटिकल क्लस्टर, रक्षा गलियारे, इलेक्ट्रॉनिक पार्क, औद्योगिक गलियारे, मछली पकड़ने के क्लस्टर के कनेक्टिविटी में सुधार और भारतीय व्यवसायों को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए कृषि क्षेत्रों को कवर किया जा रहा है। यह परियोजना भास्कराचार्य नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस एप्लिकेशन एंड जियोइन्फॉर्मेटिक्स द्वारा विकसित इसरो इमेजरी के साथ स्थानिक योजना उपकरण सहित व्यापक रूप से प्रौद्योगिकी का लाभ उद्योगों को सुनिश्चित करेगा जिससे संचार एवं इंटरनेट आदि के उच्च गुणवत्ता के साथ सूचनाओं के समन्वय और विनिमय को सुनिश्चित किया जा सके।

भारत द्वारा बहुत तेजी से कई देशों के साथ मुक्त व्यापर अनुबंध हस्ताक्षर किये जा रहे हैं जिससे देश में निर्मित बस्तुओं को एक व्यापक बाजार मिले। क्वाड समूह के द्वारा आपूर्ति श्रंखला को और तीव्र कर हिन्द प्रशांत क्षेत्र में व्यापार को सुनिश्चित करना, कई क्षेत्रों में सौ प्रतिशत विदेशी निवेश की स्वीकृति, सिंगल विंडो व्यवस्थाओं से निवेश को और अधिक सुरक्षित किया जा रहा है।

चीन के द्वारा सीमा पर किए जा रहे गतिरोध के कारण भारत में आर्थिक मोर्चे पर नुकसान पहुंचाने के लिए चीन के कई सामानों के आयात पर रोक लगा दिया है। परंतु आयात का नियंत्रण स्थाई समाधान नहीं है अभी तुम इसके लिए अपने देश के भीतर ही विनिर्माण को मजबूती प्रदान करके हम चीन से अपनी निर्भरता को हटाते हुए आत्मनिर्भर देश की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसी स्थिति प्राप्त करने के बाद भारत किसी भी सामरिक स्थिति में भी चीन को माकूल जवाब दे सकेगा। मोदी सरकार जिस प्रकार से ईमानदार प्रयास करते हुए देश के अवसंरचना के विकास तथा विनिर्माण में निवेश कर रही है विष्वास से कहा जा सकता है कि वह दिन दूर नहीं जब भारत, चीन से विश्व की फैक्ट्री का ताज छीन कर स्वयं के मस्तक पर धारण कर लेगा।

सरकार चली–गांव गरीब के द्वार !

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने विकास खण्ड शिवगढ़ की ग्राम पंचायत रायपुर नेरूआ में आयोजित ग्राम चौपाल में सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याकारी योजनाओं के सम्बन्ध में लगाये गये स्टालों पर जाकर लाभार्थीपरक योजनाओं की जानकारी सम्बन्धित विभागों से ली। ग्राम चौपाल में लगाए गए स्टालों का स्थलीय निरीक्षण किया तथा लोगों को बताया कि लोगों की समस्याओं को सुनने एवं योजनाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से सरकार स्वयं आपके दरवाजे पर चलकर आयी है। सरकार का उद्देश्य है कि गांव में अन्तिम छोर पर रहने वाले व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे और कोई भी पात्र व्यक्ति सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के लाभ लेने से वंचित न रहें, लोगों का उत्थान एवं विकास हो सके। उपमुख्यमंत्री ने इसी दौरान बाल विकास पुष्टाहार विभाग द्वारा लगाए गए स्टॉलो का अवलोकन कर बच्चों को अन्नप्राशन भी कराया। प्रदेश सरकार द्वारा बिजली, पानी, प्रधानमंत्री आवास व मुख्यमंत्री आवास आदि लाभ परक योजनाओं से गरीब व किसानों को लाभ दिलाया जा रहा है।

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार गरीबों की हितेषी है जो सबका साथ – सबका विकास –सबका विश्वास मूलमंत्र को लेकर सभी के सुख समृद्धि विकास के साथ ही प्रदेश का चौमुखी विकास की ओर बढ़ रही है।

गांव की समस्या का–गांव में ही समाधान हो, इसलिए गांव, गरीब के द्वार पर सरकार चल कर जा रही है,इसी कड़ी में आज यहां ग्राम चौपाल का आयोजन किया गया है। इसी तरह आज पूरे प्रदेश में ग्राम चौपालो का आयोजन किया जा रहा है। कहा ,गांव और गरीबों के जीवन में खुशहाली लाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।किसान हितों को सर्वोपरि रखा जायेगा।हर हांथ को काम– हर व्यक्ति के चहरे पर मुस्कान लाना सरकार का लक्ष्य व ध्येय है,और इस दिशा में बहुत ही उल्लेखनीय व उत्कृष्ट कार्य हो रहे हैं।

गांव और गरीबों के जीवन में खुशहाली लाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने ग्राम चौपाल में आए हुए ग्रामीणों की समस्याओं को सुनकर अधिकारियों को तत्काल प्राप्त शिकायतों के निस्तारण करने के निर्देश दिये।

ग्राम चौपाल में प्रधानमंत्री आवास योजना – ग्रामीण के अन्तर्गत पात्र लाभार्थियों को आवास का प्रमाण पत्र दिया। बीसी सखी को साड़ी वितरण किया तथा विद्युत सखी को बिजली बिल कनेक्शन हेतु विद्युत डिवाइस का वितरण किया तथा यूपी स्टेट में 10 किलो मीटर रेस में करन मिश्रा एवं 05 किलो मीटर रेस में शिवा सिंह को प्रथम स्थान प्राप्त होने पर मेडल देकर सम्मानित किया।

21 जनवरी को G20 दौड़

जी–20 सम्मेलन की मेजबानी भारत द्वारा 01 दिसम्बर, 2022 से 03 नवम्बर, 2023 के मध्य की जानी है। इस सम्मेलन में भारत राष्ट्र की अध्यक्षता में 200 से अधिक बैठकें होंगी, जिसमें उत्तर प्रदेश में विभिन्न तिथियों में कुल 11 बैठकों का आयोजन लखनऊ, आगरा, वाराणसी एवं ग्रेटर नोएडा में होना प्रस्तावित है। जी–20 की बैठकों हेतु चयनित जनपदों में G20 सम्मेलन के प्रदेश में व्यापक प्रचार–प्रसार एवं जनसहभागिता सुनिश्चित करने हेतु 21 जनवरी, 2023 को "RUN FOR G20" का आयोजन किया जायेगा।

प्रमुख सचिव ने लखनऊ, वाराणसी, आगरा एवं मेरठ के मण्डलायुक्त तथा लखनऊ, वाराणसी, आगरा एवं गौतमबुद्ध नगर के जिलाधिकारियों, लखनऊ, वाराणसी एवं आगरा के नगर आयुक्त एवं ग्रेटर नोयडा विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी को निर्देश देते हुए कहा है कि जी–20 का आयोजन इन नगरों के एक अथवा एक से अधिक स्थानों पर भी आयोजित किया जा सकता है। आयोजन अलग–अलग श्रेणियों में जैसे कि महिला, पुरूष, छात्र, व्यवसायी, मीडिया आदि तथा अलग–अलग दूरी जैसे कि 1000 मी0, 2000 मी०, अथवा अधिक दूरी पर भी किया जा सकता है। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों की प्रतिभागिता होनी चाहिए। यह कार्यक्रम एक या अधिक व्यक्तियों/कम्पनियों की स्पांसरशिप से कराया जायेगा।

कार्यक्रम में प्रतिभागियों को टी–शर्ट, कैप इत्यादि, जिस पर जी–20 एवं स्वच्छ यू०पी० का लोगो/इस चिन्ह अंकित होगा, के साथ–साथ प्रशासन के हस्ताक्षर युक्त प्रमाण पत्र इत्यादि भी प्रदान किया जायेगा। कार्यक्रम में सुरक्षा, मार्ग–व्यवस्था, यातायात व्यवस्था इत्यादि का पूर्व आकलन कर लिया जाये तथा त्रुटिरहित व्यवस्था सुनिश्चित की जायेगी, जिससे किसी भी प्रकार की अव्यवस्था तथा दुर्घटना की स्थिति उत्पन्न न हो। कार्यक्रम में मेडिकल व्यवस्था, एम्बुलेंस इत्यादि का पूर्व से आंकलन कर समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जायेंगी। कार्यक्रम को भारत अभियान से जोड़ते हुये साफ–सफाई तथा सुन्दरीकरण के अभियान चलाये जायेंगे।

'वन रैंक वन पेंशन'

में पुनरीक्षण, 25.13 लाख से अधिक लोगों को मिलेगा लाभ

इसके तहत 30 जून, 2019 तक सेवानिवृत्त होने वाले सशस्त्र बलों के कार्मिक कवर किए जायेंगे और जुलाई, 2019 से लेकर जून, 2022 तक के बकाये के रूप में 23,638 करोड़ रुपये का भुगतान किया जाएगा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने 23 दिसंबर को 'वन रैंक, वन पेंशन' (ओआरओपी) के तहत सशस्त्र बलों के पेंशनभोगियों/पारिवारिक पेंशनभोगियों की पेंशन में पुनरीक्षण को 01 जुलाई, 2019 से मंजूरी दे दी। पूर्व पेंशनभोगियों की पेंशन कैलेंडर वर्ष 2018 में समान सेवा अवधि के साथ समान रैंक में रक्षा बल के सेवानिवृत्त कर्मियों की न्यूनतम और अधिकतम पेंशन के औसत के आधार पर फिर से निर्धारित की जाएगी।

30 जून, 2019 तक सेवानिवृत्त होने वाले सशस्त्र बलों के कार्मिकों {01 जुलाई, 2014 से समय–पूर्व (पीएमआर) सेवानिवृत्त होने वाले को छोड़कर} को इस पुनरीक्षण के तहत कवर किया जाएगा। 25.13 लाख से अधिक (4.52 लाख से अधिक नए लाभार्थियों सहित) सशस्त्र बलों के पेंशनभोगियों/पारिवारिक पेंशनभोगियों को लाभ होगा। निर्धारित औसत से अधिक पेंशन पाने वालों की पेंशन को संरक्षित किया जाएगा। यह लाभ युद्ध में शहीद होने वाले सैन्यकर्मियों की विधवाओं और दिव्यांग पेंशनरों सहित पारिवारिक पेंशनरों को भी दिया जाएगा।

बकाये का भुगतान चार छमाही किस्तों में किया जाएगा। हालांकि, विशेष/उदारीकृत पारिवारिक पेंशन पाने वालों और वीरता पुरस्कार विजेताओं सहित सभी पारिवारिक पेंशनभोगियों को एक किस्त में बकाया राशि का भुगतान किया जाएगा।

पुनरीक्षण के कार्यान्वयन से 8,450 करोड़ रुपये/31 प्रतिशत महंगाई राहत (डीआर) का अनुमानित वार्षिक व्यय होगा। 01 जुलाई, 2019 से लेकर 31 दिसंबर, 2021 तक के बकाये की गणना 01 जुलाई, 2019 से लेकर 30 जून, 2021 की अवधि के लिए डीआर/17 प्रतिशत और 01 जुलाई, 2021 से लेकर 31 दिसंबर, 2021 तक की अवधि के लिए/31 प्रतिशत के आधार पर की गई है और यह राशि 19,316 करोड़ रुपये से अधिक है।

01 जुलाई, 2019 से लेकर 30 जून, 2022 तक कुल बकाया राशि लागू महंगाई राहत के अनुसार लगभग 23,638 करोड़ रुपये की होगी। यह व्यय ओआरओपी के मद में हो रहे व्यय के अतिरिक्त है।

उल्लेखनीय है कि केंद्र सरकार ने रक्षा बलों के कार्मिकों/पारिवारिक पेंशनभोगियों के लिए 'वन रैंक वन पेंशन' (ओआरओपी) को लागू करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया और 01 जुलाई, 2014 से पेंशन में पुनरीक्षण के लिए 07 नवंबर, 2015 को नीति पत्र जारी किया। उक्त नीति पत्र में यह उल्लेख किया गया था कि भविष्य में पेंशन हर पांच वर्ष में फिर से निर्धारित की जाएगी। ओआरओपी के कार्यान्वयन में आठ वर्षों में प्रति वर्ष 7,123 करोड़ रुपये की दर से लगभग 57,000 करोड़ रुपये खर्च किए गए हैं।

नौसेना को मिला स्वदेशी मिसाइल विध्वंसक युद्धपोत 'आईएनएस मोरमुगाओ'

'आईएनएस मोरमुगाओ' सबसे शक्तिशाली स्वदेश निर्मित युद्धपोतों में से एक है, जो देश की समुद्री क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा और राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करेगा

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह की उपस्थिति में स्टील्थ गाइडेड–मिसाइल डिस्ट्रॉयर पी15बी वर्ग के दूसरे युद्धपोत भारतीय नौसेना जहाज (आईएनएस) मोरमुगाओ (डी67) को 18 दिसम्बर, 2022 को मुंबई में नौसेना डॉकयार्ड में कमीशन किया गया। समारोह के दौरान भारतीय नौसेना के संस्थानिक संगठन वॉरशिप डिजाइन ब्यूरो द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन किए गए और मुंबई के मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (एमडीएल) द्वारा निर्मित चार 'विशाखापत्तनम' श्रेणी के विध्वंसक में से दूसरे का औपचारिक रूप से समावेशन किया गया।

रक्षा मंत्री ने 'आईएनएस मोरमुगाओ' को सबसे शक्तिशाली स्वदेश निर्मित युद्धपोतों में से एक बताया, जो देश की समुद्री क्षमताओं को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाएगा और राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करेगा। उन्होंने कहा कि आईएनएस मोरमुगाओ विश्व के सबसे तकनीकी रूप से उन्नत मिसाइल वाहकों में से एक है। 75 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ यह युद्धपोतों के डिजाइन और विकास में भारत की उत्कृष्टता और हमारी बढ़ती स्वदेशी रक्षा उत्पादन क्षमताओं का एक बेहतरीन उदाहरण है।

रक्षा मंत्री ने कहा कि यह युद्धपोत हमारे देश के साथ–साथ विश्व भर में हमारे मित्र देशों की वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। उन्होंने कहा कि यह भारत के लिए बहुत गर्व की बात है। रक्षा मंत्री ने पूरे देश की ओर से भारतीय नौसेना को न केवल समुद्री हितों की रक्षा करने, बल्कि सामाजिक–आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए बधाई दी।

उन्होंने कहा कि हमारी बढ़ती अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से बढ़ते व्यापार से जुड़ी है, जिनमें से अधिकांश समुद्री मार्गों के माध्यम से है। हमारे हित सीधे तौर पर हिंद महासागर से जुड़े हैं। इस क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण देश होने के कारण इसकी सुरक्षा में भारतीय नौसेना की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

रक्षा अधिग्रहण परिषद् ने सेनाओं के लिए 84,328 करोड़ रुपए के खरीद प्रस्तावों को दी मंजूरी

खरीद प्रस्तावों में फ्यूचरिस्टिक इन्फैंट्री कॉम्बैट व्हीकल, हल्के टैंक, नौसेना पोत-रोधी मिसाइल, बहुउपयोगी पोत, मिसाइल प्रणाली की नई रेंज, लंबी दूरी के निर्देशित बम और अगली पीढ़ी के अपतटीय पेट्रोल पोत शामिल हैं

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में रक्षा अधिग्रहण परिषद् (डीएसी) ने 22 दिसंबर को आयोजित बैठक में 24 पूंजी अधिग्रहण प्रस्तावों के लिए आवश्यकता की स्वीकृति (एओएन) को मंजूरी दी। कुल 84,328 करोड़ रुपये के इन प्रस्तावों में भारतीय सेना के लिए छह, भारतीय वायु सेना के लिए छह, भारतीय नौसेना के लिए 10 और भारतीय तटरक्षक बल के लिए दो प्रस्ताव शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि इनमें स्वदेशी स्रोतों से खरीद के लिए 82,127 करोड़ रुपये (97.4 फीसदी) के 21 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। डीएसी की यह अद्वितीय पहल न केवल सशस्त्र बलों का आधुनिकीकरण करेगी, बल्कि 'आत्मनिर्भर भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए रक्षा उद्योग को भी पर्याप्त बढ़ावा देगी।

इस एएनओ को मंजूरी प्रदान किए जाने से भारतीय सेना परिचालन तैयारियों के लिए परिवर्तनकारी मंचों और उपकरणों जैसेकिकृ फ्यूचरिस्टिक इन्फैंट्री कॉम्बैट व्हीकल, हल्के टैंक और माउंटेड गन प्रणाली से युक्त होगी। इन स्वीकृत प्रस्तावों में हमारे सैनिकों के लिए बेहतर सुरक्षा स्तर वाले बैलिस्टिक हेलमेट की खरीद भी शामिल है।

नौसेना की पोत–रोधी मिसाइलों, बहुउद्देश्यीय पोतों और उच्च सहनशक्ति वाले स्वायत्त वाहनों की खरीद के लिए दी गई इस मंजूरी से भारतीय नौसेना की क्षमताओं को बढ़ावा देने वाली समुद्री ताकत में और अधिक बढ़ोतरी होगी।

मिसाइल प्रणाली की नई रेंज, लंबी दूरी के निर्देशित बम, पारंपरिक बमों के लिए रेंज संवर्द्धन किट और उन्नत निगरानी प्रणाली को शामिल करके भारतीय वायु सेना को और अधिक घातक क्षमताओं के साथ मजबूत किया जाएगा। भारतीय तट रक्षक के लिए अगली पीढ़ी के अपतटीय गश्ती जहाजों की खरीद तटीय क्षेत्रों में निगरानी क्षमता को नई ऊंचाइयों तक बढ़ाएगी।

मिलेट्स का मूल भारत है

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा 20 दिसंबर को संसद परिसर में सांसदों के लिए 'विशेष मिलेट्स लंच' आयोजित कर देश–दुनिया में मिलेट्स को बढ़ावा देने की बड़ी पहल की गई। वर्ष 2023 में अंतरराष्ट्रीय पोषक–अनाज वर्ष मनाने की तैयारी की दृष्टि से आयोजन में उपराष्ट्रपति व राज्यसभा के सभापति श्री जगदीप धनखड़, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, लोकसभा स्पीकर श्री ओम बिरला, राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश, पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवगौड़ा, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा, कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में कांग्रेस के नेता श्री अधीरंजन चौधरी, राज्यसभा में सदन के नेता व केंद्रीय मंत्री श्री पीयूष गोयल सहित अन्य मंत्रियों व राज्यसभा व लोकसभा के सदस्यों ने शामिल होकर ज्वार, बाजरा, रागी जैसे पोषक–अनाज से तैयार व्यंजनों का स्वाद लिया और दिल खोलकर इनकी तथा समग्र आयोजन की तारीफ की व मिलेट्स ईयर का स्वागत किया।

वर्ष 2023 अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित

प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल तथा भारत सरकार के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष घोषित किया है, जिसे देशभर के साथ ही वैश्विक स्तर पर उत्साह के साथ मनाया जाएगा। इसकी तैयारियां राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जोरों पर चल रही है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय मिलेट्स की मांग और स्वीकार्यता बढ़ाने के उद्देश्य से इसके विषय में जागरूकता के प्रसार के लिए सभी के साथ मिलकर अनेक कदम उठा रहा है।

केंद्रीय मंत्री तोमर का कहना है कि प्रधानमंत्री श्री मोदी चाहते हैं हमारे प्राचीन पोषक–अनाज को भोजन की थाली में पुनः सम्मानजनक स्थान मिलें। साथ ही, यह पहल दीर्घकाल में मिलेट्स की खेती करने वाले किसानों को लाभकारी प्रतिफल सुनिश्चित करेगी।

प्रधानमंत्री एवं अन्य नेतागण संसद में दोपहर के भोजन में हुए शामिल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी अन्य नेताओं के साथ संसद में दोपहर के भोजन में शामिल हुए, जहां मिलेट्स से तैयार व्यंजन परोसे गए। अपने एक ट्वीट में प्रधानमंत्री ने कहा कि अब जबकि हम 2023 को अंतरराष्ट्रीय पोषक-अनाज वर्ष के रूप में मनाने की तैयारी कर रहे हैं, मैं संसद में एक शानदार दोपहर के भोजन में शामिल हुआ, जहां मिलेट्स से तैयार व्यंजन परोसे गए। इसमें दलगत भावना से हटकर हुई भागीदारी को देखकर अच्छा लगा।

सांसदों के लिए विशेष लंच के माध्यम से पोषक-अनाज को बढ़ावा देने की बड़ी पहल

यह उत्सवीय वर्ष मनाने की पूर्व तैयारी के मद्देनजर मिलेट्स से बने सुस्वादु व्यंजनों के साथ संसद परिसर में सहभोज का आयोजन किया गया, जिसमें उपराष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के विशेष सान्निध्य में मंत्रियों–सांसदों सहित दोनों सदनों में विभिन्न दलों के नेताओं ने मिलेट्स का स्वादानुभव किया। लंच में भारतीय पोषक–अनाज से बनाए गए विभिन्न प्रकार के शानदार व्यंजनों को प्रदर्शित करने के लिए क्यूरेटेड मिलेट्स–आधारित बुफे के तहत कई आयटम्स परोसी गई।

संसद के प्रांगण को मिलेट्स आधारित रंगोली से खूबसूरती से सजाया गया था और देशभर की प्राथमिक पोषक–अनाज फसलों को यहां प्रदर्शित किया गया, जिसका अवलोकन उप राष्ट्रपति श्री धनखड़ व प्रधानमंत्री श्री मोदी ने किया। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय और अन्य संबंधित हितधारकों द्वारा अंतरराष्ट्रीय पोषक–अनाज वर्ष के लिए विभिन्न प्रचार कार्यक्रमों का एक चित्र कोलाज भी यहां प्रदर्शित किया गया। कर्नाटक व राजस्थान के रसोइयों के समूहों ने आयोजन के लिए विभिन्न व्यंजन बनाए।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा हाल ही में रोम (इटली) में अंतरराष्ट्रीय पोषक–अनाज वर्ष का शुभारंभ समारोह आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में भारतीय प्रतिनिधिमंडल शामिल हुआ था। मिलेट्स प्राचीन व शुष्क भूमि की महत्वपूर्ण फसलें हैं। छोटे दाने वाली इन अत्यधिक पौष्टिक अनाज–खाद्य फसलों को कम वर्षा में सीमांत मिट्टी/कम उपजाऊ मिट्टी व उर्वरक तथा कीटनाशक जैसे इनपुट की कम मात्रा में उगाया जाता है।

मिलेट्स का मूल भारत है, जिनकी पोषक–अनाज के रूप लोकप्रियता रही है, क्योंकि सामान्य कामकाज के लिए ये आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। मिलेट्स एशिया एवं अफ्रीका में कृषि के रूप में अपनाई जाने वाली पहली फसल थी, जो बाद में विश्वभर में विकसित सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत के रूप में फैल गई।

मकर संक्रान्तिः आत्मवत् सर्वभूतेषु

मकर संक्रान्ति भारतीय संस्कृति परम्परा में परिवर्तन, समरसता, सुमंगल विकास का प्रतीक है। देशभर में अनेक नामों से जाना जाता है। उत्तर भारत में ''खिंचड़ी'' के नाम से भी प्रचलित है। प्रयागराज के संगम पर विशेष स्नान, कल्पवास होता है, चार वर्षों पर कुंभ का मेला लगता है।

गोरखपुर में गुरुगोरखनाथ मन्दिर पर खिचड़ी मेला लगता है जिसमें खिचड़ी चढ़ती है। रा.स्व. संघ इसको उत्सव के रूप में मनाता है। इस उत्सव पर श्री मोहन भागवत जी ने कहा कि प्रकृति भी अपना स्वभाव सृष्टि के हित में बदलती है, हमें भी अपना स्वभाव गरीबों के हित में बदलना चाहिए, जैसे जरूरतमंदों की दान देकर मदद करना. बच्चों में दान देने की आदत डालनी चाहिए. उन्होंने कहा कि दुनिया में इन दिनों अपने–अपने पंथ और संप्रदाय को ही सर्वोपरि बताने की प्रवृति बढ़ी है जो गलत और अस्वीकारणीय है। भारत में भी अनेक जातियां, बोलियां और देवी–देवता हैं, लेकिन वह हमारी पहचान नहीं हैं। 40 हजार सालों से भारत की पहचान उसकी संस्कृति, उसके पूर्वज हैं।

आदिवासी भी हमारे अपने हैं उनका सर्वस्व विकास करने तथा अपने साथ लेकर चलने की चिंता भारतीय समाज को करनी चाहिए। जब–जब हम भारत की लिए लड़े, हमारी एकता कायम रही, हमें कोई जीत नहीं सका। लेकिन जैसे–जैसे हम पंथ, संप्रदाय, भाषा इत्यादि को लेकर ल ड़ने लगे, हमारा देश टूटने लगा. हमें हमारे पूर्वजों पर अभिमान होना चाहिए. राजनीति तोड़ती है, लेकिन समाज और संस्कृति व्यक्ति को जोड़ती है। हजार वर्षों से अफगानिस्तान से बर्मा तक चीन की तिब्बत की ढलान से श्रीलंका के दक्षिण तक जितना जनसमूह रहता है, उतने जनसमूह का डीएनए यह बता रहा है कि उनके पूर्वज समान हैं। यह हमको जोड़ने वाली बात है। आज हम एक दूसरे को भूल गए हैं, रिश्ते–नाते भूल गए हैं, आपस में एक दूसरे का गला पकड़कर झगड़ा भी कर रहे हैं, लेकिन वास्तविकता ये है कि हम एक ही घर के लोग

हैं। हम समान पूर्वजों के वंशज हैं।

मकर संक्रांति पर्व एक खगोलीय घटना है।मकर संक्रांति का अर्थ होता है सूर्य का एक राशि से उससे अगले राशि में जाना या संक्रमण करना। इस प्रकार पूरे वर्ष में कुल बारह संक्रांतियां होती हैं।

आंध्र, तेलंगाना, कर्णाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, उड़ीसा, पंजाब, गुजरात प्रांतों में संक्रांति के दिन से ही माह प्रारम्भ होता है जबकि बंगाल और असम में संक्रांति के दिन माह का अंत होता है।

पौष मास में जब सूर्य धनु राशि से निकलकर शनि के राशि मकर में प्रवेश करता है तो इस खगोलीय पर्व को मकर संक्रांति के उत्सव के रूप में पूरे देश में सूर्य के आराधना के रूप में अलग अलग तरीके से मनाया जाता है।

सूर्य उत्तरायण कब होता है

मकर संक्रांति पर्व के दिन ही सूर्य उत्तरायण होंगे। शास्त्रों में सूर्य के उत्तरायण होने का बहुत महत्त्व है। सूर्य के उत्तरायण होने का अर्थ है सूर्य की किरणों का पूर्व से उत्तर की ओर गमन जिससे मौसम गरम होना प्रारम्भ हो जाता है। गीता के अध्याय 8 के श्लोक 24 में कहा गया है की जिस मार्ग में उत्तरायण के छह महीनों का अभिमानी देवता है उस मार्ग में मरकर गए हुए ब्रह्मवेत्ता, योगी जन देवताओं द्वारा ले जाए जाकर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

षास्त्रों के अनुसार दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि अर्थात नकारात्मकता का प्रतीक समझा जाता है। उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात सकारात्मकता का प्रतीक मानते हैं और धारणा है की इस दिन जब की उत्तरायण प्रारम्भ हो रहा है गंगा स्नान और दान पुण्य का अतिशय महत्त्व है।

मकर संक्रांति जैसा पर्व राष्ट्रीय जीवन की प्रतिध्वनि है। सतत् प्रवहमान भारतीय संस्कृति में सूर्य के प्रति आस्था और ऐक्य की भावना के साथ चेतना का विश्वास है जो आत्मवत सर्वभूतेषु की भावना का द्योतक है।

प्रयागराज में कुंभ, अर्द्ध कुम्भ तथा माघ मेला का स्नान पर्व मकर संक्रांति से ही प्रारम्भ हो जाता है।

सूर्य यद्यपि सभी राशियों को प्रभावित करते हैं परन्तु कर्क और मकर राशि पर सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से फलदायक होता है, यह प्रवेश छह मास पर होता है।

भारतीय पंचांग पद्धति में समस्त तिथियां चन्द्रमा की गति के आधार पर निर्धारित की जाती हैं किन्तु मकर संक्रांति का निर्धारण सूर्य की गति से होता है अतः मकर संक्रांति 14 जनवरी को ही पड़ती है।

मकर संक्रांति जैसा पर्व राष्ट्रीय जीवन की प्रतिध्वनि है। सतत प्रवहमान भारतीय संस्कृति में सूर्य के प्रति आस्था और ऐक्य की भावना के साथ चेतना का विश्वास है जो दृआत्मवत सर्वभूतेषु की भावना का द्योतक है।

तभी तो मकर संक्रांति पर्व की पूर्व संध्या पर अँधेरा होते ही 13 जनवरी की रात को अग्निदेव को तिल, गुड़, चावल और भुने हुए मक्के की आहुति देकर संक्रांति का स्वागत हरियाणा और पंजाब में किया जाता है।

पूरे भारत में मकर संक्रांति किसी न किसी रूप में मनाया जाता है। गुजरात और उत्तराखंड में उत्तरायण के रूप में। हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब में माघी के रूप में उत्तर प्रदेश, बिहार में खिचड़ी के रूप में। बंगाल में पौष संक्रांति के रूप में। तमिलनाडु में पोंगल के रूप में चार दिनों तक इस त्यौहार को मनाते हैं। शेष प्रांतों में इसे मकर संक्रांति के रूप में मनाया जाता है। इस त्योहार के साथ सूर्य की उपासना ,पवित्र नदियों में स्नान और दान की परंपरा जुड़ी हुई है।

वैचारिकी

सामूहिकता का भाव

–पं. दीनदयाल उपाध्याय

इसी प्रकार जब द्रोणाचार्य यहां पर आए तो सीधी बात है कि द्रोणाचार्य को पुत्र का मोह था। भाई, अपने सेनापति को पुत्र का मोह, क्या वास्तव में मोह करने की जरूरत है? अगर सेनापति पुत्र का मोह लेकर चलेगा, तो क्या वह लड़ाई लड़ सकता है। उसको तो सब कुछ अपने समष्टि का विचार करना चाहिए, परंतु नहीं, वह अपने पुत्र के मोह को नहीं छोड़ सके, अरे इतने लोग मारे गए, तब दुःख नहीं हुआ, परंतु जब पुत्र मारा गया तो व्याकुल होकर शस्त्र छोड़ बैठे और दूसरी तरफ युधिष्ठिर जैसा व्यक्ति भी, जिसके बारे में कहते थे कि उन्होंने जीवन में कभी झूठ नहीं बोला और जिसके कारण कहते थे कि उनका रथ पृथ्वी से छह इंच ऊपर चलता था, परंतु फिर भी उन्हें इस बात की चिंता नहीं थी कि युधिष्ठिर का क्या होगा? दुनिया क्या कहेगी? उन्होंने कहा कि भाई, ठीक है, यह समष्टि का ही काम है, भगवान् कृष्ण का आदेश है। इसको करूंगा। उसे अपने नाम की चिंता नहीं थी, कीर्ति की चिंता नहीं थी। अपना नाम लेकर के और 'नरो व कुंजरो', झूठ ही क्यों न बोल दिया हो।

अब द्रोणाचार्य व्यक्तिवादी थे और युधिष्ठिर, यह समष्टिवादी धर्म, समाज का विचार, समूह का विचार करके चलते थे, व्यक्ति का विचार नहीं। वही बात कर्ण की है। आपको मालूम होगा कि कर्ण के पास कवच और कुंडल थे। वे कवच और कुंडल ऐसे थे कि जब तक वे उसके पास रहते, तो कोई उसका किसी भी प्रकार से अहित नहीं कर सकता था। सूर्य के दिए हुए कवच और कुंडलों के बारे में इंद्र को पता था। इंद्र ब्राह्मण का रूप धारण करके कर्ण के यहां गए। भगवान् सूर्य को यह बात पता लग गई कि यह होगा और इंद्र ऐसा करनेवाले हैं, कवच और कुंडल मांगनेवाले हैं तो उन्होंने कर्ण से कहा कि तू कुछ भी करना, लेकिन अपने कवच और कुंडल बिल्कुल मत देना। इतनी चेतावनी के बाद भी जब इंद्र वहां पहुंचे और उनसे कवच और कुंडल मांगे, तो कर्ण ने अपने कवच और कुंडल उनको दे दिए। क्योंकि उसको लगा कि मैं दानवीर हूं और मुझसे कोई मांगे और मैं न दूं? कर्ण दानवीर कर्ण तो हो गया, पर जिस पक्ष को ग्रहण किया था, जिस समाज का वह अंग बनकर खड़ा हुआ था, उसी का नहीं हुआ। वह भी व्यक्तिवादी रहा। इंद्र को भी सोचना चाहिए था कि मैं इंद्र जैसा व्यक्ति, देवताओं का राजा और ब्राह्मण का रूप धारण करके भीख मांगने गया, उन्होंने चिंता नहीं की। क्या यह काम धर्म का काम है?

कुंती के बारे में आपको मालूम है? कर्ण कुंती का बेटा था और जब वह कुंआरी थी, तब पैदा हुआ था और उस समय केवल लोकापवाद के डर से कि दुनिया क्या कहेगी, इसलिए उसने अपने पेट के लाड़ले को नदी के अंदर बहा दिया। यानी मां द्वारा अपने बच्चे को नदी के अंदर बहाना कितना बड़ा कठोर कर्म है, परंतु उसी कुंती ने बाद में जब अवसर आया, कर्ण के सामने जाकर यह बात कही कि तू मेरा बेटा है। अगर कुंती यह रहस्योद्घाटन न करती तो दुनिया को यह पता भी न होता कि वह कुंती का बेटा है। कुंती ने अपने माथे के ऊपर कालिख पोत ली, लेकिन केवल इसलिए कि एक सामूहिक ध्येय सामने रखा था, वह पूरा हो जाए। वह कर्ण से यह वचन लेकर आई थी कि वह अर्जुन को छोड़कर किसी पर बाण नहीं चलाएगा। यानी बाक़ी के सब अपने पुत्रों का अभयदान उसने मांग लिया। आप वही देखेंगे कि भगवान् कृष्ण ने भी प्रतिज्ञा की थी कि 'मैं शस्त्र नहीं चलाऊंगा', परंतु जब मौक़ा आ गया तब तो भीष्म के ऊपर वे भी शस्त्र लेकर दौड़ पड़े, यानी भगवान् ने अपनी प्रतिज्ञा की चिंता नहीं की; परंतु भीष्म ने प्रतिज्ञा की चिंता की ऐसा लगता है कि वहां जितने भी कौरव पक्ष में थे, वे बड़े–बड़े महारथी थे। इधर तो कुछ नहीं थे, उनके

मुक़ाबले में यानी मैन टू मैन कहेंगे, एक–एक व्यक्ति का मुकाबला करेंगे तो इधर के पांडव पक्ष के एक–एक व्यक्ति से कौरव पक्ष का हर व्यक्ति ज्यादा निपुण था। ज्यादा वीर था। शूरता थी, सब कुछ थी, परंतु इतना होने के बाद भी अगर उनमें कुछ कमी थी, वह यह थी कि हर व्यक्ति था, वहां पर सब मिलकर कोई समूह नहीं था, समाज नहीं था, उनके अंदर कोई समष्टि भाव नहीं था। वे अलग–अलग थे, एक–एक करके हर कोई अपने नाम की चिंता करता था, कोई अपनी वीरता की चिंता करता था। किसी को अपने राज्य की चिंता नहीं थी। केवल दुर्योधन अपना राज्य चाहता था। इधर पांडव पक्ष में जितने थे, ये मिलकर एक थे और भगवान् कृष्ण को सबने नेता बनाया, बस उसकी जो आज्ञा है उसका पालन करेंगे, यह विश्वास था। विचार लेकर चले थे। किसी ने अपने नाम की चिंता नहीं की। किसी ने कहा कि भाई झूठ बोलना है, तो झूठ बोला, किसी ने कहा कि गदायुद्ध के नियमों का उल्लंघन करना है, उसने नियमों का उल्लंघन किया, किसी ने कहा कि तुम्हें जाकर कर्ण से भीख मांगनी है, तो उसने जाकर भीख मांगी, किसी ने कहा कि तुम्हें रहस्योद्घाटन करना है, तो रहस्योद्घाटन किया। खुद द्रौपदी भीष्म पितामह के पास गई और उसने जाकर पूछा कि तुम्हारी मृत्यु का रहस्य क्या है यह तो बताओ, भीष्म पितामह तो खुद बताने लगे कि अगर शिखंडी सामने आ जाएगा तो मैं बाण नहीं चलाऊंगा। मृत्यु का यह रहस्य द्रौपदी ने पूछा। अब इतना सब कुछ हुआ। और आप वहां पर देखेंगे, तो सब लोग एक गुट होकर काम करनेवाले समष्टिवादी थे।

वास्तव में समष्टिवाद ही धर्म है। राष्ट्रवाद धर्म है। समूह के लिए राष्ट्र के लिए काम करना, यह धर्म है। व्यक्ति के लिए और व्यक्ति का ही विचार करके काम करना, यह अधर्म है। मोटी सी व्याख्या है। एक ही व्याख्या है कि सच्चाई और झूठ का समष्टिभाव

वास्तव में समष्टिवाद ही धर्म है। राष्ट्रवाद धर्म है। समूह के लिए राष्ट्र के लिए काम करना, यह धर्म है। व्यक्ति के लिए और व्यक्ति का ही विचार करके काम करना, यह अधर्म है। मोटी सी व्याख्या है। एक ही व्याख्या है कि सच्चाई और झूठ का समष्टिभाव।

जिसको लोग सच कहते हैं, सामान्य जीवन के लिए यह ठीक है। रोज के जीवन में यदि कोई कहेंगे तो भगवान् कृष्ण ने झूठ बुलवाया या युधिष्ठिर ने झूठ बोला तो हम भी रोज झूठ बोलें, तो रोज झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा। यह निर्णय राष्ट्र का विचार करके होगा। हरेक स्थिति का नियम है, लड़ाई होती है, लड़ाई में सिपाही गोली चलाकर नर हत्या करता है। यानी दुश्मन के ऊपर गोली चलाता है। अब आप यह कहेंगे कि वाह–वाह सिपाही आखिर रोज़ हिंसा करता है। हम भी हिंसा कर डालें तो? आपको मार डाले तो? मगर आप नहीं मार सकते हैं यानी सिपाही की हिंसा, वह हिंसा नहीं है। सिपाही की हिंसा और उसने कितने ज्यादा लोग मारे, इसके ऊपर तो उसको परमवीर चक्र प्रदान किया जाता है। अगर आप किसी को मार डालें तो आपको बिल्कुल फांसी की सजा हो जाएगी। दोनों में फर्क हो जाता है, यानी वह राष्ट्र के लिए करता है, इसलिए उसका नाम होता है। राष्ट्र के लिए करता है, इसलिए उसकी हिंसा हिंसा नहीं होती। वही काम अगर कोई राष्ट्र के विरोध में करेगा, तो वह फिर हिंसा मानी जाती है।

कौन सी चीज़ हिंसा है, कौन सी चीज़ हिंसा नहीं है। दुश्मन के यहां जाकर लोग जासूसी करते हैं। तरह–तरह की चीजें करते हैं। अनेक प्रकार के जिनको कुकर्म कहा जाता है, वे कर्म भी करते हैं, झूठ बोलते हैं, चोरी करके लाते हैं, परंतु दुश्मन के यहां से कोई चोर उनके रहस्य को चुराकर ले आया या फाइल चुराकर ले आया तो क्या उसको लोग चोर कहेंगे? कहेंगे कि तुमको तो इंडियन पीनल कोड के अनुसार सजा मिलनी चाहिए? क्योंकि तुम तो वहां से फाइल चुराकर लाए थे, ऐसे व्यक्ति का तो आप सम्मान करेंगे, परंतु अगर वही व्यक्ति यहां पर किसी की जेब में से उसकी चीज़ चुरा लेगा तो उसे दंड दिया जाएगा, यानी वह चोरी है और वहां से दुश्मन के यहां से चुराकर लाया, तो वह चोरी नहीं है। क्योंकि वह राष्ट्र के लिए है। एक राष्ट्र के लिए है और दूसरी नहीं।

सबसे बड़ा वैभव है राष्ट्र का वैभव। उसके लिए काम किया जाए, वही ताक़त है। ताक़त भी अगर कोई कहेंगे तो व्यक्तिगत रूप से काम, वह ताक़त नहीं, उससे आकांक्षा की पूर्ति नहीं होती, उसमें शक्ति भी नहीं है। जब हम सामूहिक रूप से काम करेंगे और इसलिए हमने अपनी प्रार्थना में दूसरी बात साथ–साथ में कही है कि संगठन कार्य शक्ति है। हमने भगवान् से यह नहीं कहा है कि हे भगवान्, हमें वैभव दे दीजिए। यह हमने नहीं कहा, बल्कि हमने अपने मन की कामना का उल्लेख किया है। हमने आशीर्वाद मांगा है। साथ ही, हमने यह बात कह दी है कि संगठित कार्य शक्ति निश्चित रूप से विजयशाली होती है। जहां पर संगठित कार्यशक्ति नहीं होगी, सामूहिक शक्ति नहीं होगी, वहां पर विजय नहीं मिलेगी, इस एक बात को समझ करके हम चलें।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वास्तव में संपूर्ण समाज में यही एक भाव पैदा करता है, राष्ट्रीयता का भाव। यह राष्ट्रीयता का भाव ऐसा है कि जिसके आधार पर बाक़ी की सब चीजें ठीक हो सकती हैं। यह एक भाव नहीं रहा तो बाक़ी की सब चीजें अच्छी से अच्छी चीजें भी बेकार हैं।

श्रद्धांजलि

पं0 केसरी नाथ त्रिपाठी पंचतत्व में विलिन

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी तथा प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने भाजपा के श्रेष्ठ नेता, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल एवं पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्री केसरी नाथ त्रिपाठी जी का 8 जनवरी को प्रयागराज में निधन हो गया। संगमतट पर सनातन रीति से राजकीय सम्मान के साथ अन्त्येश्टि सम्पन्न हुई।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य, स्वतंत्रदेव सिंह, सांसद हरिश दूबे आदि गणमान्य नेता प्रयागराज पहुंचकर श्रद्धेय केसरी नाथ त्रिपाठी जी के पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि अर्पित किये। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने निधन को अत्यन्त दुःखद एवं संगठन की अपूर्णनीय क्षति बताया।

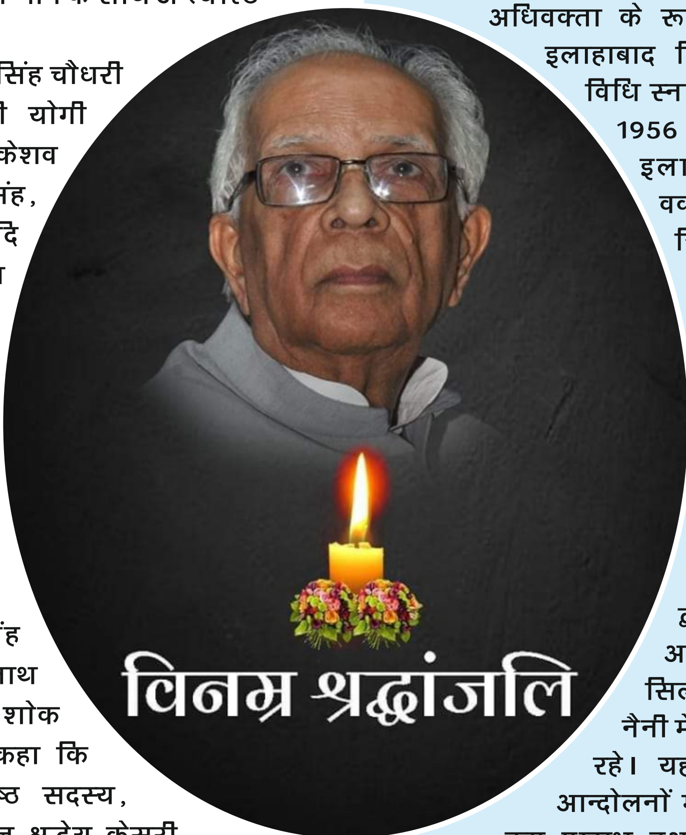

प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा परिवार के वरिष्ठ सदस्य, कार्यकर्ताओं के प्रेरणा पुंज श्रद्धेय केसरी नाथ त्रिपाठी जी का निधन अत्यंत दुखद व हृदय विदारक है। श्रद्धेय केसरी नाथ त्रिपाठी जी एक नेता तथा संगठन शिल्पी के रूप में सदैव स्मरण में रहेंगे। उनका व्यक्तित्व हम सभी को सदैव प्रेरणा देता रहेगा।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि श्रद्धेय केसरी नाथ त्रिपाठी जी का निधन पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति है। उत्तर प्रदेश में संगठन को मजबूत करने में उनका योगदान सदैव अविस्मरणीय रहेगा।

श्री केशरी नाथ त्रिपाठी का जन्म इलाहाबाद में 10 नवम्बर 1934 को हुआ था। उनके पिता स्व0 हरिश्चन्द्र त्रिपाठी उच्च न्यायालय में कार्यरत थे। माता–पिता एवं बड़े भाइयों द्वारा प्रदत्त नैतिक मूल्यों की शिक्षा, भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट श्रद्धा तथा कर्मक्षेत्र में नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा ने आपके व्यक्तित्व को संवारा और एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं सफल अधिवक्ता के रूप में स्थापित किया। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक एवं विधि स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की एवं 1956 से एक अधिवक्ता के रूप में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करते रहे। 1989 में श्री त्रिपाठी को उच्च न्यायालय में वरिष्ठ अधिवक्ता की मान्यता मिली।

श्री त्रिपाठी 1946 में भारतीय जनसंघ में एक स्वयं सेवक के रूप में सम्मिलित हुए एवं 1952 में भारतीय जनसंघ की स्थापना काल से ही उसके कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने लगे। 1953 में भारतीय जनसंघ द्वारा चलाए गये कश्मीर आन्दोलन में भाग लिया और इसी सिलसिले में केन्द्रीय कारागार, नैनी में राजनीतिक कैदी के रूप में बन्द रहे। यहीं से स्थानीय एवं प्रादेशिक आन्दोलनों में आपकी सक्रिय भागीदारी का क्रम प्रारम्भ हुआ। श्री राम जन्म भूमि मुक्ति आन्दोलन के समय भी आप 23 अक्टूबर, 1990 से 10 नवम्बर, 1990 तक बन्द रहे।

श्री त्रिपाठी का विवाह 1958 में सुश्री सुधा त्रिपाठी से हुआ। इनके एक पुत्र एवं दो पुत्रियां है। पुत्री नीरज त्रिपाठी उच्च न्यायालय में अधिवक्ता है।

श्री केशरी नाथ त्रिपाठी की विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति में रूचि रही। विद्यार्थी काल में ही आप 'डेकोक्रेटिक स्टूडेन्ट यूनियन' के अध्यक्ष रहे एवं अन्य विद्यार्थी आन्दोलनों से सक्रिय रूप से सम्बद्ध रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
सुफलाम्
पृथ्वी तत्व

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी
सुफलाम्
पृथ्वी तत्व
7-9 जनवरी, 2023
विज्ञान संस्थान,

"अयोध्या के वैभव का कल्याण मार्ग"
विषय पर
गोष्ठी एवं भजन संध्या

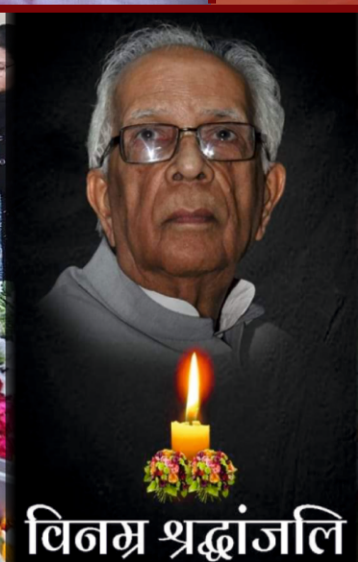
विनम्र श्रद्धांजलि

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
जनवरी प्रथम अंक 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी